सांध्य दैनिक
4PM

आप किसी व्यक्ति से उस भाषा में बात करें जो वो समझता है, तो बात उसके सर में जाती है, यदि आप उससे उसकी भाषा में बात करते हैं, तो बात उसके दिल तक जाती है।

–नेल्सन मंडेला

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 10 ● अंकः 270 ● पृष्ठः 8 ● लखनऊ,शुक्रवार, 8 नवम्बर, 2024

अफ्रीका में चमक बिखेरने को तैयार... 7 | बसपा के उत्थान के लिए राह... 3 | यूपी उपचुनावः सियासी दल... 2

'एएमयू का अल्पसंख्यक दर्जा बरकरार रहेगा'

सुप्रीम कोर्ट ने कहा- कोई भी धार्मिक समुदाय संस्थान की स्थापना कर सकता है

» 7 जजों की बेंच ने 4:3 के बहुमत से सुनाया फैसला

» अल्पसंख्यक का दर्जा मिला पर मानदंड के साथ

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट में शुक्रवार को अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के अल्पसंख्यक दर्जे के मामले में सुनवाई की। सात जजों की बेंच ने 4-3 के बहुमत से अपना फैसला सुनाया। सुप्रीम कोर्ट ने एएमयू का अल्पसंख्यक दर्जा बरकरार रखा है। शीर्ष अदालत ने कहा कि एएमयू एक अल्पसंख्यक संस्थान हैं। मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि कोई भी धार्मिक समुदाय संस्थान की स्थापना कर सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कहा कि अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (एएमयू) संविधान के अनुच्छेद 30 के तहत अल्पसंख्यक दर्जे का हकदार है। उधर इस फैसले के बाद मिलीजुली प्रतिक्रिया आई है। वहीं बहुमत के फैसले में एएमयू को अल्पसंख्यक संस्थान का दर्जा देने के लिए मानदंड निर्धारित किए गए हैं। इस निर्णय में यह स्पष्ट किया गया है कि एएमयू के अल्पसंख्यक संस्थान होने का निर्धारण वर्तमान मामले में बताए गए परीक्षणों और मानदंडों के आधार पर किया जाएगा। एएमयू के अल्पसंख्यक दर्जे पर सुप्रीम कोर्ट का कहना है कि इस मामले से संबंधित दस्तावेज मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) के समक्ष रखे जाएं ताकि 2006 के इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले की वैधता पर विचार करने के लिए एक नई पीठ का गठन किया जा सके। जनवरी 2006 में, इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने 1981 के उस कानून के प्रावधान को रद्द कर दिया था जिसके तहत अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय ((एएमयू) को अल्पसंख्यक दर्जा दिया गया था।

कोर्ट के फैसले का स्वागत : रशीद फिरंगी

ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के सदस्य मौलाना खालिद रशीद फिरंगी महली ने कहा, हम सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत करते हैं जिसमें उसने 1967 के अपने फैसले को खारिज कर दिया है। तब फैसले में कहा गया था कि एएमयू अल्पसंख्यक संस्थान नहीं है। मुझे लगता है कि एएमयू के अल्पसंख्यक दर्जे को तय करने में सुप्रीम कोर्ट का फैसला काफी मददगार साबित होगा। सभी ऐतिहासिक तथ्य हमारे सामने हैं और हम उन्हें तीन जजों की बेंच के सामने पेश करेंगे। सबसे बड़ा सवाल यह है कि अगर अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी को अल्पसंख्यक संस्थान नहीं माना जाता है तो फिर कौन सा संस्थान अल्पसंख्यक संस्थान माना जाएगा और अनुच्छेद 30ए का क्या होगा?

तीन जजों की पीठ लेगी अंतिम निर्णय

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि एएमयू के अल्पसंख्यक दर्जे को लेकर तीन जजों की नई बेंच बनेगी। यह नई बेंच ही तय करेगी एएमयू का दर्जा क्या होगा। बेंच अल्पसंख्यक संस्थानों के लेकर मानदंड भी तय करेगी। बता दें कि संविधान के अनुच्छेद 30 के तहत धार्मिक और भाषायी अल्पसंख्यकों को शैक्षणिक संस्थान स्थापित करने और उनके प्रशासन का अधिकार है। सात न्यायधीशों वाली संविधान पीठ में जस्टिस संजीव खन्ना, सूर्यकांत, जेबी पारदीवाला, दीपांकर दत्ता, मनोज मिश्रा और सतीश चंद्र शर्मा शामिल हैं।

एस अजीज बाशा बनाम यूनियन ऑफ इंडिया मामला खारिज

सुप्रीम कोर्ट ने 4:3 से एस अज़ीज़ बाशा बनाम यूनियन ऑफ़ इंडिया मामले को खारिज कर दिया, जिसमें 1967 में कहा गया था कि चूंकि अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है, इसलिए इसे अल्पसंख्यक संस्थान नहीं माना जा सकता। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि एएमयू के अल्पसंख्यक दर्जे के मुद्दे पर रेगुलर बेंच द्वारा निर्णय लिया जाएगा।

अदालत को संस्थान की उत्पत्ति पर विचार करना होगा : सीजेआई

कुछ विश्वविद्यालय ऐसे थे जो शिक्षण कॉलेज थे और शिक्षण कॉलेजों को शिक्षण विश्वविद्यालयों में बदलने की प्रक्रिया एक शैक्षणिक संस्थान बनाने की प्रक्रिया है और इसलिए इसे इतने संकीर्ण रूप से नहीं देखा जा सकता है। यह नहीं कहा जा सकता कि सिर्फ इसलिए कि अधिनियम की प्रस्तावना ऐसा कहती है, इसलिए एक संस्थान कानून द्वारा बनाया गया है। मौलिक अधिकारों को वैधानिक भाषा के अधीन नहीं किया जा सकता है और औपचारिकता को वास्तविकता के लिए रास्ता देना चाहिए। अदालत को संस्थान की उत्पत्ति पर विचार करना होगा और अदालत को यह देखना होगा कि संस्थान की स्थापना के पीछे कौन था,यह देखना होगा कि जमीन के लिए किसे धन मिला और क्या अल्पसंख्यक समुदाय ने मदद की थी? चीफ जस्टिस ने कहा कि हमने माना है कि एक अल्पसंख्यक संस्थान होने के लिए इसे केवल अल्पसंख्यक की ओर से स्थापित किया जाना चाहिए, न कि जरूरी है कि अल्पसंख्यक सदस्यों की तरफ से प्रशासित किया जाए। अल्पसंख्यक संस्थान धर्मनिरपेक्ष शिक्षा पर जोर दे सकते हैं और इसके लिए प्रशासन में अल्पसंख्यक सदस्यों की आवश्यकता नहीं है।

भाजपा की विचारधारा ने मणिपुर को जलाया : राहुल

» एनडीए व मोदी सरकार पर बरसे नेता प्रतिपक्ष

» बोले- भाजपा दलित व अल्पसंख्यक विरोधी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता व लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी नें एनडीए सरकार व प्रधानमंत्री पर जमकर हमला बोला है। उन्होंने झारखंड के सिमडेगा में एक रैली को संबोधित करते हुए लोगों से कहा कि मैं आपको मणिपुर के बारे में बताता हूं। नेता प्रतिपक्ष बोले भाजपा ने मणिपुर को जलाया और आज तक प्रधानमंत्री ने वहां का दौरा नहीं किया। इसका मतलब है कि उन्होंने यह बात मान ली है कि मणिपुर जैसा कोई प्रदेश नहीं है। मणिपुर को जलाने का काम भाजपा की विचारधारा ने किया है। उन्होंने आगे कहा भाजपा दलित व अल्पसंख्यक विरोधी है। उन्होंने इससे पहले कहा कि सरकार उनकी छवि खराब कर रही है। उन्होंने कहा कि वह व्यवसायों के नहीं, बल्कि एकाधिकार के खिलाफ हैं।

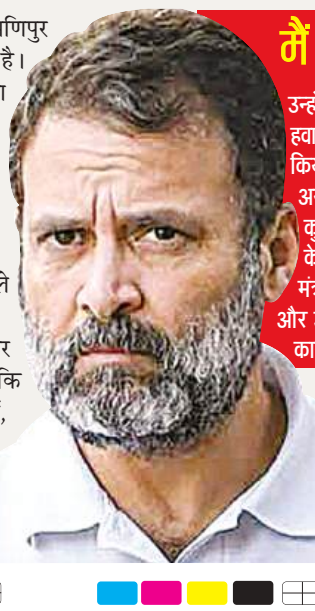

मैं व्यवसाय विरोधी नहीं, एकाधिकार के खिलाफ हूं

उन्होंने अपने एक लेख का हवाला देते हुए यह दावा भी किया कि नियम-कायदे के अनुसार काम करने वाले कुछ कारोबारी समूहों को केंद्र सरकार के एक वरिष्ठ मंत्री, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी सरकार के कार्यक्रमों की तारीफ करने के लिए मजबूर कर रहे हैं। दरअसल भाजपा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ बेबुनियाद आरोप लगाने के लिए राहुल गांधी की आलोचना की थी और उनसे किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले तथ्यों की जांच करने की सलाह दी थी। राहुल गांधी ने एक वीडियो जारी कर कहा, भाजपा के लोगों द्वारा मुझे व्यवसाय विरोधी बताने का प्रयास किया जा रहा है। लेकिन मैं व्यवसाय विरोधी नहीं हूं, बल्कि एकाधिकार के खिलाफ हूं। उनका कहना है कि वह एक, दो, तीन या पांच लोगों के उद्योग जगत में एकाधिकार स्थापित करने के खिलाफ हैं।

मैं नौकरियों के सृजन का समर्थक हूं

कांग्रेस नेता ने कहा मैंने अपने करियर की शुरुआत प्रबंधक सलाहकार के रूप में की। मैं कारोबार की सफलता के लिए जरूरी चीजों को समझता हूं। एक्स पर एक पोस्ट में कहा, मैं नौकरियों के सृजन का समर्थक हूं, व्यवसाय का समर्थक हूं, इनोवेशन का समर्थक हूं, प्रतिस्पर्धा का समर्थक हूं। मैं एकाधिकार विरोधी हूं। हमारी अर्थव्यवस्था तभी फूलेगी-फलेगी जब सभी व्यवसायों के लिए स्वतंत्र और निष्पक्ष स्थान होगा।

सरकार के बारे में सोशल मीडिया पर अच्छी बातें लिखने को किया जा रहा मजबूर

बाद में उन्होंने एक अन्य पोस्ट में दावा किया, मेरे लेख के बाद, नियम-कायदे से चलने वाले व्यवसायिक समूहों ने मुझे बताया कि एक वरिष्ठ मंत्री फोन कर रहे हैं और उन्हें प्रधानमंत्री मोदी और सरकार के कार्यक्रमों के बारे में सोशल मीडिया पर अच्छी बातें कहने के लिए मजबूर कर रहे हैं। राहुल गांधी ने कहा कि इससे उनकी बात बिल्कुल सही साबित होती है। कांग्रेस नेता ने एक लेख में दावा किया था कि ईस्ट इंडिया कंपनी भले ही सैकड़ों साल पहले खत्म हो गई हो, लेकिन उसने जो डर पैदा किया था, वह आज फिर से दिखाई देने लगा है और एकाधिकारवादियों की एक नयी पीढ़ी ने उसकी जगह ले ली है।

यूपी उपचुनाव : सियासी दल चुनावी प्रचार को तैयार

इंडिया गठबंधन नौ सीटों पर लगाएगा पूरा दम, राहुल-प्रियंका के साथ केजरीवाल भी करेंगे दौरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। प्रदेश में नौ सीटों पर हो रहे उपचुनाव को लेकर सियासी पार्टियों ने प्रचार के लिए कमर कस ली है। इंडिया गठबंधन अगले सप्ताह चुनाव प्रचार को धार देगा। वहीं भाजपा ने भी चुनावी अभियान में प्रचार की कमान सीएम योगी ने संभाल लिया हे वह जल्द ही चुनावों वालें सीटों पर रैलियां शुरू करेंगे। वहीं इंडिया गठबंधन ने प्रदेश में दो से तीन संयुक्त रैली कराने की तैयारी है।

यूपी के विपक्षी दल इसके जरिए उपचुनाव में एकजुटता का संदेश देने की रणनीति बनाई गई है। प्रदेश की नौ सीटों पर हो रहे उपचुनाव में कांग्रेस ने पांच सीटें मांगी थी, लेकिन सपा ने सिर्फ दो सीटें देने की घोषणा की। अंतिम समय तक सीटें नहीं तय हो पाने की वजह से कांग्रेस ने चुनाव मैदान से किनारा कर दिया। ऐसे में सपा ने सभी नौ सीटों पर उम्मीदवार उतार दिए हैं। पिछले सप्ताह गाजियाबाद में अखिलेश यादव ने जनसभा की, जिसमें कांग्रेस के कई नेताओं ने हिस्सा लिया। कांग्रेस ने भी सभी सीटों पर प्रभारी और पर्यवेक्षक उतार दिए हैं।

इस बीच कांग्रेस के ज्यादातर नेता वायनाड में हो रहे उपचुनाव में चले गए हैं। ऐसे में इंडिया गठबंधन ने रणनीति तैयार की है कि अगले सप्ताह के बाद प्रदेश में दो से तीन संयुक्त रैली की जाएगी। इसमें सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के साथ कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी अथवा राहुल गांधी, आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल सहित अन्य समान विचारधारा वाले दलों के नेताओं को बुलाया जाएगा। इस संयुक्त रैली के जरिए विपक्ष की एकजुटता का संदेश देने की तैयारी है।

जल्द तैयार होंगे बड़े नेताओं के कार्यक्रम : अजय राय

कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने बताया कि गाजियाबाद से लेकर मझवां तक कांग्रेस के नेता बूथ स्तर पर डटे हुए हैं। वरिष्ठ नेता अभी वायनाड सहित अन्य राज्यों में भी गए हुए हैं। उत्तर प्रदेश में कार्यक्रम तय होते ही वे यहां जनसभाएं करेंगे। हालांकि अभी अधिकृत तौर पर किसी का कार्यक्रम तय नहीं हुआ है।

सपा और कांग्रेस के नेता संयुक्त रूप से हिस्सा ले रहे : चौधरी

सपा के राष्ट्रीय सचिव एवं मुख्य प्रवक्ता राजेंद्र चौधरी ने बताया कि विभिन्न स्थानों पर जनसभाएं हो रही हैं। सपा और कांग्रेस के नेता संयुक्त रूप से हिस्सा ले रहे हैं। कोशिश है कि दो से तीन बड़े आयोजन किए जाएं, जिसमें कांग्रेस सहित अन्य दलों के वरिष्ठ नेताओं को बुलाया जाएगा।

अब बीजेपी प्रत्याशी का नया पोस्टर आया चर्चा में

» अबकी जिताय द... या फिर टिकठी पर लिटाय द

» पूर्व मंत्री धर्मराज निषाद का पोस्टर हो रहा वायरल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में इन दिनों उपचुनाव को लेकर राजनीतिक सरगर्मियां तेज हैं। इस बार के उपचुनाव में पोस्टर वार भी खूब देखने को मिल रहा है। अंबेडकरनगर में कटेहरी विधानसभा सीट पर भी उपचुनाव होना है। यहां से बीजेपी प्रत्याशी पूर्व मंत्री धर्मराज निषाद का एक पोस्टर वायरल हो रहा है। उनकी क्षेत्र में एक अपील करते हुए होर्डिंग लगी है। इसमें लिखा है या तो अबकी जिताय दा... या फिर टिकठी पर लिटाय दा।

खुद के जीवन मरण से चुनाव को जोड़ते हुए यह अपील की गई है। बसपा सरकार में मंत्री रहे धर्मराज कटेहरी से लगातार तीन बार विधायक रहे। हालांकि वे बसपा के टिकट पर जौनपुर और अयोध्या जनपद में चुनाव लड़कर बाद में हार गए। बीजेपी में शामिल होने के बाद अकबरपुर से भी चुनाव लड़ा लेकिन सफलता नहीं मिली। अब फिर से वे कटेहरी वापस लौटे हैं।

भाजपा को मिल जाएगा जनता का जवाब : माता प्रसाद पांडेय

भारतीय जनता पार्टी को विधानसभा उपचुनाव में जनता का जवाब मिल जाएगा। हार से बचने के लिए भाजपा न सिर्फ मतदान की तारीख को आगे पीछे कर रही है बल्कि सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग भी कर रही है। उपचुनाव में इनका बोरिया बिस्तर जनता खुद बांध देगी। उक्त बातें नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पांडेय ने कहीं। उन्होंने कहा कि जनता से अपना रिश्ता मजबूत रखिए तथा उनकी परेशानियों पर आवाज भी उठाइए। जनता इस महंगाई, बेरोजगारी व भ्रष्टाचार से तंग आ चुकी है। इस मौके पर घोषी विधायक सुधाकर सिंह, सपा नेता जयशंकर पांडेय, विजय यादव आदि मौजूद रहे।

हिमाचल में कोई गुटबाजी नहीं : प्रतिभा

» कांग्रेस नेत्री ने की एक व्यक्ति, एक पद की वकालत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

शिमला। हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस द्वारा अपनी सभी इकाइयों को भंग करने के एक दिन बाद, प्रदेश कांग्रेस प्रमुख प्रतिभा सिंह ने कहा कि वह राज्य में कांग्रेस सरकार बनने के बाद से ही एक व्यक्ति, एक पद की वकालत कर रही थीं। बुधवार को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने पार्टी में नई जान फूंकने के लिए पीसीसी, जिला और ब्लॉक इकाइयों सहित प्रदेश कांग्रेस कमेटी को भंग कर दिया।

उन्होंने कहा, पार्टी में कोई गुटबाजी नहीं है और मैंने मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू के साथ मिलकर उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री और अन्य वरिष्ठ नेताओं से परामर्श के बाद इकाइयों को भंग करने के लिए पार्टी हाईकमान को पत्र लिखा था। सिंह ने कहा, मैंने पहले भी कांग्रेस विधायक दल की बैठक में एक व्यक्ति, एक पद का मुद्दा उठाया था और कहा था कि संगठन में कांग्रेस के नेता जो अब सरकार का हिस्सा हैं, उन्हें खुद ही अपने पद छोड़ देने चाहिए और अपने प्रतिस्थापन के लिए सुझाव देने चाहिए। उन्होंने कहा कि पार्टी के वरिष्ठ नेताओं से सलाह ली जाएगी और उनके सुझावों पर विचार किया जाएगा कि वे किसे पदों पर देखना चाहते हैं ताकि वे राज्य में कांग्रेस को मजबूत करने के लिए एकजुट होकर काम करें। उन्होंने कहा कि निष्क्रिय नेताओं की जगह मेहनती लोगों को लाया जाएगा जो पार्टी के काम के लिए अधिक समय दे सकें और वरिष्ठ नेताओं, महिलाओं, युवाओं, एससी, एसटी और ओबीसी को राज्य कांग्रेस कार्यसमिति में जगह दी जाएगी। नवंबर 2022 में पहाड़ी राज्य में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद से पीसीसी में कोई बदलाव नहीं हुआ है।

छोटी होगी कांग्रेस की नई कार्यकारिणी

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष प्रतिभा सिंह ने कहा कि सभी वरिष्ठ नेताओं की सहमति से नई कार्यकारिणी गठित होगी। यह बहुत लंबी नहीं होगी। महिलाओं और युवाओं को इसमें प्राथमिकता दी जाएगी। पार्टी और संगठन में दोनों जगह नेताओं को तैनाती नहीं दी जानी चाहिए। वह खुद वन मैन-वन पोस्ट की हिमायती है। लिहाजा नई कार्यकारिणी के गठन के वक्त इसका ध्यान रखा जाएगा। नई कार्यकारिणी में कार्यकारी अध्यक्ष होंगे या नहीं इसको लेकर वरिष्ठ नेताओं से चर्चा की जाएगी। प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय राजीव भवन शिमला में प्रेस वार्ता कर प्रतिभा ने कहा कि सरकार और संगठन में से एक ही पद देने और कार्यकारी अध्यक्षों की जरूरत पर भी चर्चा की जाएगी।

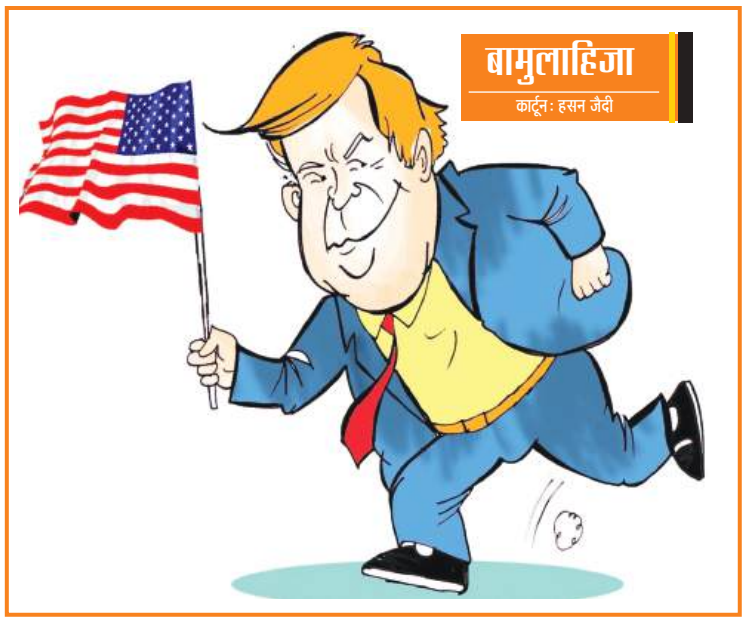

भाजपा की रगों में है अहंकार और पक्षपात : टीकाराम जूली

» भाजपा नेता मदन राठौड़ के बयान पर भड़की कांग्रेस

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अलवर। राजस्थान विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ के उस बयान को लोकतंत्र विरोधी बताया है जिसमें उन्होंने कहा कि विरोधी मानसिकता का व्यक्ति जीता तो वह क्षेत्र में विकास के काम नहीं करा पाएगा।

जूली ने कहा कि भाजपा प्रदेश अध्यक्ष का बयान दर्शाता है कि भाजपा विकास के मुद्दे पर किस कदर पूर्वाग्रही मानसिकता और सत्ता का अहंकार रखती है। अहंकार और पक्षपात भाजपा की रगों में है। नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि आज जयपुर में भाजपा मुख्यालय में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ का ये कथन कि विरोधी मानसिकता का व्यक्ति जीता तो वह क्षेत्र में विकास कार्य कराने में संकोच करेगा। राठौड़ का यह कथन लोकतंत्र की मूल भावना के विपरीत है और भाजपा की संकुचित मानसिकता का परिचायक है। जूली ने कहा कि विधानसभा उप चुनाव की सातों सीटों पर भाजपा की हार तय है। इससे विचलित होकर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष लोकतंत्र विरोधी बयान दे रहे हैं।

बसपा के उत्थान के लिए राह तलाश रहीं मायावती !

- युवाओं को साथ जोड़ने के लिए आकाश आनंद को किया आगे
- अचानक सतीश मिश्रा की फ्रंट रो में वापसी से हर कोई हैरान
- इस बार उपचुनावों में भी ताल ठोंक रही है बीएसपी

गीताश्री/4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। देश की सियासत में इस समय चुनावी हलचल काफी तेज है। क्योंकि महाराष्ट्र और झारखंड में विधान सभा चुनाव समेत देश के कई राज्यों में उपचुनाव भी होने हैं। इनमें देश के सबसे प्रमुख राज्य उत्तर प्रदेश का नाम भी शामिल है, जहां पर 9 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव होना है। ऐसे में प्रदेश में उपचुनाव को लेकर सियासत गरमाई हुई है और पोस्टर वार व नारों के जरिए एक-दूसरे को घेरने और जनता को लुभाने के प्रयास लगातार किए जा रहे हैं। वैसे तो उपचुनाव की लड़ाई प्रदेश के सत्ताधारी दल भाजपा और प्रमुख विपक्षी दल समाजवादी पार्टी के बीच मानी जा रही है। क्योंकि कांग्रेस इंडिया गठबंधन के बैनर तले समाजवादी पार्टी का समर्थन कर रही है। जबकि पिछले कई सालों से प्रदेश की सियासत में हाशिए पर खड़ी बहुजन समाज पार्टी की इस उपचुनाव में कोई खास महत्वा नजर नहीं आ रही है।

हालांकि, अक्सर ही उपचुनावों से दूर रहने वाली बसपा इस बार उपचुनावों में भी अपना पूरा दम-खम झोंक रही है। अब बसपा के इस कदम को सपा को नुकसान पहुंचाने वाले कदम के रूप में भी देखा जा रहा है। जिससे परोक्ष रूप से फायदा भाजपा को ही पहुंचेगा। यानी जो काम बसपा ने लोकसभा चुनाव में किया, जिसमें वो खुद तो जीरो पर पहुंच गई। अब वो ही काम बसपा एक बार फिर उपचुनावों में भी करने को बेकरार लगती है। क्योंकि ऐसा माना जा रहा है कि ये विधानसभा उपचुनाव काफी रोमांचक रहने वाले हैं। इन उपचुनावों में भाजपा और सपा के बीच कड़ी टक्कर होने की पूरी उम्मीद है। एक ओर भाजपा सत्ता में होने के चलते मजबूत नजर आ रही है, तो वहीं दूसरी लोकसभा चुनावों के प्रदर्शन से उत्साहित समाजवादी पार्टी भी इन उपचुनावों में भाजपा के सामने एक मजबूत चुनौती पेश कर रही है। ऐसे में अब बसपा के भी उपचुनाव में उतरने से निश्चित ही भाजपा से नाराज वोटर बंटेगा, जिसका नुकसान सीधे तौर पर सपा को होगा और फायदा भाजपा को। इसीलिए बसपा के उपचुनाव में उतरने के फैसले को भाजपा को लाभ पहुंचाने वाले फैसले के रूप में भी देखा जा रहा है। हालांकि, पिछले काफी वक्त से सियासी हाशिए पर खड़ी बसपा अब एक बार फिर खुद को पुनर्जीवित करने का प्रयास कर रही है। अपने उत्थान के लिए बसपा अब एक नई रणनीति बना रही है। जिसके लिए बसपा प्रमुख मायावती लगातार नए-नए फैसले ले रही हैं। अब एक बार फिर बीएसपी सुप्रीमो मायावती ने बीच चुनावों के कुछ ऐसे फैसले लिए हैं, जो चर्चा का विषय बन गए हैं। मायावती के इन फैसलों पर अब राजनीतिक विश्लेषक अपने-अपने कयास लगा रहे हैं और अपनी-अपनी नजर से इन फैसलों को देख रहे हैं व

बसपा के लिए सर्वाइवल का सवाल बने यूपी उपचुनाव

लोकसभा चुनाव में आकाश आनंद खासे सक्रिय थे। आकाश आनंद ने यूपी में ताबड़तोड़ रैलियां कीं लेकिन नतीजे आए तो हाथी खाली हाथ ही रह गया। इसे आकाश आनंद की नेतृत्व क्षमता से जोड़ा जाने लगा था, विफलता बताया जाने लगा था। बसपा नहीं चाहती कि उपचुनाव नतीजों के बाद वैसी स्थिति बने। साथ ही मायावती अब बसपा का फिर से उत्थान चाहती हैं। इसीलिए बसपा के लिए यूपी उपचुनाव एक तरह से सर्वाइवल का सवाल बन गए हैं। 2022 के यूपी उपचुनाव में एक विधानसभा सीट पर सिमटी बसपा आम चुनाव में खाली हाथ रह गई थी। पार्टी के सिमटते जनाधार को लेकर भी काफी बात हो रही है। मायावती और बसपा के सियासी भविष्य पर सवाल उठ रहे हैं। ऐसे में सर्वाइवल का सवाल बन चुके यूपी उपचुनाव में मायावती सियासत में अपेक्षाकृत नवप्रवेशी आकाश आनंद को फ्रंट पर डालने की जगह खुद मोर्चा संभालने के मोड में नजर आ रही हैं।

महाराष्ट्र में खाता खुलना भी बड़ी बात

बसपा को वैसे भी बहुत पाने की उम्मीद इन उपचुनावों से नहीं है, लेकिन एएसपी के प्रदर्शन से तुलना तो हो ही सकती है। पार्टी कहीं एएसपी से पीछे रही तो उसे चंद्रशेखर के सामने आकाश आनंद की विफलता की तरह भी देखा जा सकता था। अब आकाश प्रचार की कमान संभालेंगे भी तो बसपा के पास यह तर्क होगा कि उनका फोकस महाराष्ट्र और झारखंड के चुनावों पर था। अगर बात करें महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों की, तो यहां बसपा के पास खोने के लिए कुछ भी नहीं है। लेकिन अगर उसका खाता भी खुलता है तो मानों उसे बहुत कुछ मिल गया है। महाराष्ट्र चुनाव में बसपा खाता खोलने में सफल हो जाती है तो भी आकाश आनंद की जय-जय हो जाएगी। इससे लोकसभा चुनाव में विफलता का दाग भी धुल जाएगा। महाराष्ट्र में भी ठीक-ठाक संख्या में दलित हैं और सूबे में आरपीआई, वंचित बहुजन अघाड़ी जैसी पार्टियां पहले से ही दलित पॉलिटिक्स में सक्रिय हैं। ऐसे में बसपा का एक सीट जीतना भी आकाश आनंद के लिए बड़ी सफलता की तरह होगी।

फिरसे फ्रंट लाइन में आए आकाश आनंद

लोकसभा चुनावों के बीच में ही मायावती ने अपने भतीजे और राजनीतिक उत्तराधिकारी आकाश आनंद को साइडलाइन कर दिया था और सारे पदों से भी मुक्त कर दिया था। लेकिन जैसे ही लोकसभा चुनाव संपन्न हुए और बसपा 10 सीटों से शून्य पर वापस पहुंची, वैसे ही मायावती ने फिर से आकाश आनंद को वापस सभी जिम्मेदारियां सौंप दीं और पार्टी में उनकी भूमिका को फिर से उतना ही मजबूत बना दिया। जिसके बाद से अब आकाश आनंद लगातार मायावती के हर फैसले में शामिल हो रहे हैं और पार्टी में शीर्ष नेतृत्व पर बैठे हैं। यही वजह है कि चुनावी दौर में मायावती द्वारा बसपा के उत्थान के लिए लिये जा रहे हर फैसले में आकाश आनंद शामिल हैं। मौजूदा वक्त में

महाराष्ट्र और झारखंड में विधानसभा चुनाव के साथ ही उत्तर प्रदेश की 9 विधानसभा सीटों के लिए उपचुनाव हो रहे हैं। अमूमन उपचुनावों से दूरी बनाने वाली बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने भी इस बार नौ सीटों के रण में अपने रणबांकुरे उतारे हैं। बसपा ने मायावती के उत्तराधिकारी आकाश आनंद को झारखंड और महाराष्ट्र जैसे चुनावी राज्यों की जिम्मेदारी दी है। साथ ही यूपी उपचुनाव के लिए 40 स्टार प्रचारकों की भारी-भरकम लिस्ट भी जारी कर दी है। आकाश आनंद को चुनावी राज्यों की जिम्मेदारी दिया जाना और स्टार प्रचारकों की लिस्ट में मायावती के बाद नंबर दो पर सतीशचंद्र मिश्रा का नाम होना, इसके पीछे बसपा की रणनीति क्या है? इसी को लेकर हर कई अपने-अपने कयास लगा रहा है। आकाश आनंद को यूपी उपचुनाव के लिए स्टार प्रचारकों की लिस्ट में तीसरे नंबर पर जगह मिली है। उन्हें पार्टी ने झारखंड और महाराष्ट्र में चुनाव अभियान की जिम्मेदारी सौंपी है।

सतीश चंद्र मिश्रा की वापसी के मायने

आकाश आनंद का बसपा के नेतृत्व में आना और आगे रहना तो बनता है। लेकिन जिस तरह से सतीश चंद्र मिश्रा का नाम एक बार फिर से मायावती ने आगे लाया है, वो कई सवाल खड़े करता है। साथ ही मायावती की आगे की रणनीति क्या होगी इसको लेकर भी राजनीतिक विश्लेषकों के मन में एक उत्सुकता पैदा करता है। दरअसल, यूपी उपचुनाव के लिए जारी स्टार प्रचारकों की लिस्ट में सतीशचंद्र मिश्रा की नंबर दो पर वापसी हो गई है। इस लिस्ट में मायावती के बाद सतीशचंद्र मिश्रा का नाम है और उनके बाद नंबर तीन पर आकाश आनंद का नाम है। यानी आकाश आनंद को भी सतीश मिश्रा के बाद लिस्ट में जगह मिली है। इसके मायने क्या हैं?दरअसल, किसी समय में सतीशचंद्र मिश्रा की इमेज चुनावी चाणक्य की रही है। उन्हें गुणा-गणित बैठाने में काफी माहिर माना जाता है। 2007 के यूपी चुनाव में भी विधानसभा का ट्रेंड तोड़कर

बसपा पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनाने में सफल रही थी तो उसके लिए श्रेय सतीशचंद्र मिश्रा की चुनावी रणनीति को ही दिया गया था। क्योंकि उनके ब्राह्मण और दलित के समीकरण ने चुनाव में कमाल कर दिखाया था। जिसके चलते बसपा ने पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई थी। अब एक बार फिर स्टार प्रचारकों की लिस्ट में नंबर दो पर उनकी वापसी इस बात का संकेत है कि बसपा फिर से 2007 के प्रयोग दोहराने की तैयारी में है।

फिर से ब्राह्मण-दलित वाला फॉर्मूला चलने की तैयारी

यूपी में दलित आबादी करीब 20 फीसदी है। इनमें करीब 12 फीसदी जाटव हैं जो बसपा का कोर वोटर माने जाते हैं। सूबे की आबादी में करीब 12 फीसदी भागीदारी ब्राह्मणों की है। सतीशचंद्र मिश्रा को स्टार प्रचारकों की लिस्ट में आकाश आनंद से पहले स्थान दिए जाने को ब्राह्मण समाज को फिर से साथ लाने की कोशिश में उठाए गए कदम की तरह भी देखा जा रहा है। इस कदम के जरिये पार्टी ने ब्राह्मणों को यह संदेश देने की कोशिश की है कि पार्टी में उनका सम्मान है। बसपा ने 2007 के विधानसभा चुनाव में जब पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनाई थी, तब पार्टी को दलित के साथ ब्राह्मणों का भी समर्थन मिला था। बसपा ने तब अधिक ब्राह्मणों को टिकट दिया था। इस बार नौ सीटों के उपचुनाव में भी बसपा ने दो ब्राह्मणों को टिकट दिया है। दो मुस्लिम और दो ओबीसी चेहरों के साथ ही एक ठाकुर नेता पर भी पार्टी ने दांव लगाया है। यह 2007 के दलित-ब्राह्मण समीकरण से आगे दलित-सवर्ण समीकरण बनाने की रणनीति का संकेत बताया जा रहा है। यूपी से लेकर मध्य प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली और हरियाणा की राजनीति में भी कभी अच्छी धमक रखने वाली बसपा अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है। ऐसे में बीच चुनाव मायावती के इन फैसलों का क्या असर होता है, कितना असर होता है, यह 23 नवंबर की तारीख ही बताएगी।

युवा और अनुभव का समावेश करने का प्रयास

मायावती खुद भी कहती रही हैं कि बसपा पार्टी नहीं, एक आंदोलन है। इस आंदोलन का कोर वोटर, कोर सपोर्टर दलित मतदाता रहे हैं, लेकिन साल 2007 के बाद बसपा का वोट शेयर लगातार गिरता ही चला गया। मायावती अब पुराने वोटर-सपोर्टर को फिर से साथ लाने की कोशिश में जुटी हैं। बसपा की साख घटने की एक प्रमुख वजह बसपा से पुराने नेताओं का जाना भी रहा। क्योंकि एक-एक करके बसपा के कई बड़े चेहरे पार्टी से किनारे होते गए या फिर मायावती ने खुद ही उन्हें किनारे लगा दिया। ऐसे में अब जब पार्टी बिल्कुल हाशिए पर खड़ी है, तो मायावती खुद ये चाहती हैं कि पार्टी में जोश और अनुभव का समावेश हो। इसके लिए वो पुराने नेताओं को भी वापस अपने इस आंदोलन में जोड़ना चाहती हैं। मायावती की रणनीति अनुभवी नेताओं और पुराने पैंतरों को फिर से आजमाने की भी हो सकती है। आकाश आनंद युवा हैं और उनका काम करने का तरीका भी मायावती और बसपा की परंपरागत कार्यशैली से अलग है। आकाश आनंद की अपनी टीम है। ऐसे में अगर वह यूपी उपचुनाव में अधिक सक्रिय होते तो मायावती की कोर टीम के कामकाज पर असर पड़ने की संभावनाओं से भी इनकार नहीं किया जा सकता। यूपी उपचुनाव में एडवोकेट चंद्रशेखर आजाद की अगुवाई वाली आजाद समाज पार्टी भी मैदान में हैं। दलित पॉलिटिक्स की पिच पर बसपा के लिए चुनौती बनी एएसपी की सक्रियता के बीच आकाश आनंद की सक्रियता से मामला चंद्रशेखर बनाम आकाश हो सकता था।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

रेवड़ी कल्चर बना विकास में बाधा...

सबसे बड़ा सवाल ये ही उठता है कि जो प्रधानमंत्री मोदी अक्सर ही आम आदमी पार्टी और अरविंद केजरीवाल को मुफ्त रेवड़ी देने के मामले पर घेरते रहते हैं। उन पीएम मोदी की खुद की ही भाजपा हर चुनाव में न जाने क्या-क्या मुफ्त रेवड़ियों का वादा करती रहती है। खुद 5 किलो फ्री राशन देकर आम आदमी की बेसिक जरूरतों और जनहित के मुद्दों की हत्या कर सरकार बनाने वाली भाजपा दूसरों को फ्रीबीज पर ज्ञान देती है।

देश में इस वक्त फिर से चुनावी माहौल गरमाया हुआ है। वजह है महाराष्ट्र और झारखंड में होने वाले विधानसभा चुनाव। इन दोनों राज्यों में विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक हलचल काफी तेज है। सभी राजनीतिक दलों और उनके नेताओं द्वारा अपने विरोधियों पर लगातार सियासी हमले किए जा रहे हैं। इस बीच राजनीतिक दलों द्वारा जनता को लुभाने के लिए तरह-तरह के वादे भी किए जा रहे हैं। इन वादों में जनता को मुफ्त रेवड़ियां बांटी जा रही हैं। सबसे बड़ा सवाल ये ही उठता है कि जो प्रधानमंत्री मोदी अक्सर ही आम आदमी पार्टी और अरविंद केजरीवाल को मुफ्त रेवड़ी देने के मामले पर घेरते रहते हैं। उन पीएम मोदी की खुद की ही भाजपा हर चुनाव में न जाने क्या-क्या मुफ्त रेवड़ियों का वादा करती रहती है। खुद 5 किलो फ्री राशन देकर आम आदमी की बेसिक जरूरतों और जनहित के मुद्दों की हत्या कर सरकार बनाने वाली भाजपा दूसरों को फ्रीबीज पर ज्ञान देती है। लेकिन जब कहीं चुनाव आता है तो खुद भी मुफ्त रेवड़ी बांटने में सबसे आगे रहती है। अगर महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव की ही बात करें तो भाजपा के नेतृत्व वाले सत्ताधारी महायुति गठबंधन ने यहां रेवड़ी बांटने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

महाराष्ट्र चुनाव के लिए महायुति ने लाडली बहन योजना के तहत दी जा रही मासिक राशि को 1500 से बढ़ाकर दो हजार रुपये करने की घोषणा की है। फिर से सत्ता में आने पर किसानों की ऋण माफी के साथ ही किसान सम्मान योजना के तहत किसानों को 12 हजार की जगह 15 हजार रुपये वार्षिक राशि देने का वादा किया है। 10 लाख छात्रों को हर महीने 10 हजार रुपये ट्यूशन फीस देने का वादा किया है। इसके अलावा वृद्धावस्था पेंशन की राशि 1500 रुपये हर महीने से बढ़ाकर 2100 रुपये मासिक करने का भी वादा किया है। दूसरों को ज्ञान देने वाली भाजपा खुद मुफ्त रेवड़ी देने में पीछे नहीं है। महाराष्ट्र में कुछ ऐसा ही हाल विपक्षी गठबंधन महाविकास अघाड़ी का भी रहा है। एमवीए ने भी काफी कुछ फ्री देने और पैसे देने के वादे किए हैं। ऐसे में सवाल ये ही उठता है कि इस रेवड़ी कल्चर के चक्कर में और फ्री बांटने की रेस के चलते जनता के जरूरी मुद्दे चुनावों में पीछे रह जाते हैं। जिन पर राजनीतिक दलों और सरकारों को ध्यान देना चाहिए। जिन मुद्दों से किसी एक वर्ग का नहीं बल्कि पूरे प्रदेश की जनता का भला होगा। साथ ही प्रदेश भी विकास की राह पर आगे बढ़ेगा। लेकिन उन मुद्दों पर राजनीतिक दल कोई ध्यान नहीं देते। इस फ्रीबीज कल्चर को बढ़ावा देने में कहीं न कहीं जनता का भी उतना ही हाथ है। क्योंकि जब तक हम इन मुफ्त रेवड़ियों से प्रभावित होकर वोट देते रहेंगे और उनको जिताते रहेंगे, तब तक वो कभी भी हमारी जरूरतों पर ध्यान नहीं देंगे और आम जनता के हित के मुद्दों को नहीं उठाएंगे। इसलिए जनता को इस फ्रीबीज कल्चर को बायकॉट करना होगा, तभी राजनीतिक दल जनहित के मुद्दों को उठाएंगे और जनता की भलाई के लिए वादे करेंगे।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

आलोचकों को गलत साबित कर दिया ट्रंप ने

महेंद्र वेद

डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिका में राष्ट्रपति का चुनाव विशाल अंतर से जीतकर घर और बाहर अपने आलोचकों को गलत साबित कर दिया है। ट्रंप की जीत का पहला संकेत ट्रंप विरोधी और कमला हैरिस समर्थक अखबार 'द न्यूयॉर्क टाइम्स' ने दिया था। उसने ट्रंप की जीत की संभावना जाहिर की थी। दरअसल आखिरी एग्जिट पोल से भी नतीजे का अनुमान लगाया जाने लगा था, जिसमें 70 प्रतिशत अमेरिकियों ने माना था कि उनके अपने देश में लोकतंत्र खतरे में है। यह 'खतरा' ही बताने के लिए काफी था कि अमेरिकी मतदाता इस चुनाव को किस तरह से देख रहे हैं। अमेरिका का यह चुनावी नतीजा विश्व स्तर पर आये वैचारिक बदलाव को तो प्रतिबंबित करता ही है, यह परिणाम वैश्विक राजनीति के साथ-साथ अमेरिका की घरेलू राजनीति को भी गहरे तौर पर प्रभावित करेगा।

दरअसल लोकतांत्रिक विश्व की राय अमेरिका के इस चुनाव के प्रति विभाजित थी। बौद्धिकों ने ट्रंप का विरोध और हैरिस का समर्थन किया था। लेकिन यह भी सच है कि दुनिया के अनेक देश ट्रंप को विजयी देखना चाहते थे। दुनियाभर के शेयर बाजारों के खुश होने की वजह यही है। अमेरिका के चुनावी नतीजे से यह भी साफ हुआ कि अमेरिकी मतदाता महिला राष्ट्रपति को स्वीकारने के लिए तैयार नहीं है, जो आधी अश्वेत हैं, और जिनकी जड़ें भारत और अफ्रीका में हैं। कमला हैरिस को नकार देने का एक संदेश यह है कि अश्वेत बराक ओबामा को चुना जाना तो ठीक था, लेकिन राष्ट्रपति के रूप में अश्वेत महिला स्वीकार्य नहीं है। इसका एक बड़ा कारण यह भी है कि अश्वेत लोगों का कानूनी और गैरकानूनी अप्रवासन चुनाव में एक बड़ा मुद्दा था। हालांकि इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि देर से चुनाव मैदान में उतरने के बावजूद कमला हैरिस ने कम समय में प्रभावी ढंग से चुनाव अभियान को संभाला। अमेरिकी मतदाताओं ने वोट देते हुए वैश्विक चलन का ही अनुसरण किया, जिसके तहत अमूनन आक्रामक और लोकप्रियतावादी राजनेताओं को चुना जा रहा है। ट्रंप ने इस चुनाव में अपने उन पारंपरिक वोटरों को लुभाने पर पूरा जोर लगा दिया था, जिन्होंने 2020 के राष्ट्रपति चुनाव में भी उनका समर्थन किया था, भले ही तब ट्रंप चुनाव हार गये थे।

एक दूरदर्शी राजनेता की तरह ट्रंप ने अपने पारंपरिक वोटरों से लगातार समर्थन की अपील की थी। उनकी अपील का मतदाताओं पर असर पड़ा। शुरुआती नतीजे ने बताया है कि महत्वपूर्ण प्रांतों ने रिपब्लिकन गवर्नरों को चुना और यह पार्टी

सीनेट में बहुमत हासिल करने के करीब है। इससे आने वाले दिनों में ट्रंप की स्थिति और मजबूत ही होगी और हैरिस और उनकी पार्टी के लिए मुश्किलें बढ़ेंगी। ट्रंप की जीत इस अर्थ में महत्वपूर्ण है कि इसने अमेरिका और दुनिया को विरोध, अनिश्चय और हिंसा से बचा लिया है। अगर इस बार का चुनावी नतीजा पिछले चुनाव की तरह होता, तो ट्रंप के समर्थक निश्चित तौर पर सड़कों पर उतर आते। यह भी साफ है कि ट्रंप ने लोगों की भावनाओं को भांप लिया था। अमेरिकी मतदाता मेक्सिको सीमा पर दीवार खड़ी करने के पक्ष में और देश से बाहर अपने सहयोगियों को खुश करने के लिए अपने पैसे का दुरुपयोग करने के खिलाफ थे। कमला हैरिस के नारों को लोगों ने नहीं स्वीकारा, जबकि अमेरिका को फिर से महान बनाने के ट्रंप के नारे को मतदाताओं ने हाथोंहाथ लिया। इससे पहले शायद ही किसी प्रत्याशी का अमेरिका में इतना विरोध हुआ, जितना कि ट्रंप का हुआ। इसके बावजूद ट्रंप जीते। यह भी देखने लायक है कि आलोचना के वावजूद ट्रंप ने अपना अंदाज और रवैया नहीं बदला। इस बार के चुनावी अभियान में भी उनकी आक्रामकता जारी रही थी। हालांकि आने वाले दिनों में ट्रंप कौन-कौन से कदम उठाते हैं, इस बारे में इंतजार करना होगा। रूस से भयभीत यूरोप ज्यादा से ज्यादा अमेरिकी धन और हथियार चाहते हैं। यह देखना होगा कि ट्रंप आने वाले दिनों में यूरोप में शांति बहाली की दिशा में काम करते हैं, या फिर शक्तिशाली हथियार लॉबी के आगे झुक जाते हैं। रूस द्वारा यूक्रेन पर हमला करने के बाद अमेरिका ने 64.1 अरब डॉलर से भी अधिक सैन्य मदद की। बाइडेन प्रशासन ने रूस के खिलाफ पैसे और हथियार कुछ अपनी इच्छा से बांटे और कुछ यूरोप के दबाव में। देखना होगा कि ट्रंप के दौर में यह सिलसिला जारी रहता है या नहीं।

दूसरी जो चीज देखने लायक होगी, वह यह कि पश्चिम एशिया में ट्रंप का रुख क्या रहता है? अपने यहां के यहूदी वोट और उनके अकूत धन तथा ज्ञान ने अमेरिकी नेताओं को हमेशा ही प्रभावित किया है। यह देखा जा सकता है कि ट्रंप की जीत का इंतजार करने से पहले ही इस्राइल में बेंजामिन नेतन्याहू ने अपने उस रक्षा मंत्री को हटा दिया, जो गाजा में सैन्य अभियान का विरोध कर रहे थे। पश्चिम एशिया के अरबों और मुस्लिमों के लिए यह चुनौती भरा समय है। हालांकि यह मानने का कारण है कि इस्राइल का समर्थन करने की अमेरिकी नीति पर ट्रंप कायम रहेंगे। यही नहीं, इस्राइल के पक्ष में पश्चिम एशिया की भू-राजनीति को बदलने के नेतन्याहू के प्रयासों को भी ट्रंप का समर्थन जारी रहने वाला है।

विरोधी नहीं, एक-दूसरे के पूरक थे नेहरू-पटेल

विश्वनाथ सचदेव

हाल ही में देश ने सरदार वल्लभभाई पटेल की 149वीं जयंती मनायी है। बड़े आदर और सम्मान के साथ स्वतंत्र भारत के निर्माण में उनके योगदान को याद किया गया है। इस संदर्भ में हुए आयोजनों में जहां एक ओर पांच सौ से अधिक देसी रियासतों को जोड़कर एक नये भारत के निर्माण में सरदार पटेल की भूमिका को सराहा गया, वहीं यह बात भी कहना जरूरी समझा गया कि उन्हें उनका उचित देय नहीं मिला है, जबकि देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का बढ़ा-चढ़ा कर कुछ ज्यादा ही बखान किया जाता है। सच्चाई तो यह है कि इन दोनों महापुरुषों ने नये भारत की नींव रखने में जो भूमिका निभायी है उसे कमतर आंकने की किसी भी कोशिश का समर्थन नहीं होना चाहिए। दोनों का योगदान अप्रतिम है। यह बात दूसरी है कि अपने-अपने राजनीतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए लोग ऐसी कोशिशें लगातार कर रहे हैं।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि प्रधानमंत्री मोदी ने गुजरात में सरदार पटेल की सबसे ऊंची प्रतिमा बनवाकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। सरदार की जन्म जयंती को देश एकता दिवस के रूप में मनाता है, यह भी प्रधानमंत्री की पहल पर ही हुआ है। लेकिन क्या यह जरूरी है कि देश के दो सपूतों, नेहरू और पटेल, को एक-दूसरे के विरोधी के रूप में दिखाया जाये? सवाल यह भी उठता है कि क्या सचमुच इन दोनों में कोई प्रतिस्पर्धा रही थी? यह बात भी अक्सर कही जा रही है कि नेहरू की जगह यदि सरदार पटेल देश के प्रथम प्रधानमंत्री होते तो स्वतंत्र भारत का नक्शा कुछ अलग ही होता। पटेल के प्रशंसक और नेहरू के आलोचक इस 'अलग' को अपने-अपने ढंग से परिभाषित करते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि नेहरू और पटेल दोनों में कई मुद्दों पर मतभेद था। कश्मीर और हैदराबाद का प्रकरण एक ऐसा मुद्दा था। चीन के प्रति नेहरू के दृष्टिकोण से भी सरदार पटेल सहमत नहीं थे। पर इसका अर्थ एक-दूसरे का विरोधी होना नहीं है। सच्चाई तो यह है कि दोनों एक-दूसरे के प्रशंसक थे, दोनों देश का हित चाहते थे और दोनों एक-दूसरे के महत्व को स्वीकार करते थे। दोनों ने कुछ मुद्दों पर असहमति छिपाने का प्रयास कभी नहीं किया। इस असहमति को एक-दूसरे के प्रति शत्रुता के भाव के रूप में देखना या दिखाना दो महापुरुषों की बौद्धिक क्षमता पर सवालिया निशान लगाना होगा।

नेहरू और पटेल को एक-दूसरे का विरोधी निरूपित करने वाले इस बात को बार-बार दुहराते हैं कि कांग्रेस पार्टी की प्रांतीय समितियों ने एकमत से पटेल को कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष बनाने की इच्छा जाहिर की थी, और यह भी सही है कि तब जो कांग्रेस का अध्यक्ष बनता वही स्वतंत्र भारत का पहला प्रधानमंत्री भी होता। सही यह भी है कि तब हस्तक्षेप करके महात्मा गांधी ने नेहरू को कांग्रेस का अध्यक्ष बनवाया था। ज्ञातव्य है कि यह काम पर्दे के पीछे से नहीं हुआ था। गांधी ने अपना पक्ष बड़ी साफगोई से सामने रखा था, और गांधी के कहने पर ही सरदार पटेल ने तब कांग्रेस पार्टी का अध्यक्ष बनने की प्रक्रिया से स्वयं को अलग कर लिया था। और नेहरू के लिए स्वतंत्र भारत का पहला प्रधानमंत्री बनने का रास्ता साफ हो गया था।

यहीं इस बात को भी समझना जरूरी है कि स्वतंत्र भारत के पहले मंत्रिमंडल में पटेल को शामिल करने, न करने, पर नेहरू के मन में कोई हिचक नहीं थी। तब अपने मंत्रिमंडल में शामिल होने के लिए नेहरू ने जो पत्र पटेल को लिखा था, उसमें उन्होंने पटेल को 'अपनी कैबिनेट का सबसे मजबूत स्तंभ' कहा था। नेहरू पटेल की क्षमता-योग्यता से अच्छी तरह परिचित थे और मंत्रिमंडल में उनकी आवश्यकता को पूरी तरह समझते थे। नेहरू के उस पत्र के उत्तर में पटेल ने जो लिखा अब वह भी सार्वजनिक हो चुका है अपने उस पत्र में सरदार पटेल ने नेहरू को लिखा था, 'मैं जीवन भर आपको समर्थन दूंगा'। पटेल ने उस पत्र में यह भी कहा था कि 'उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मैं आपका पूरा साथ दूंगा, जिसके लिए और किसी ने इतना त्याग नहीं किया जितना आपने किया है। हमारा साथ अटूट है, और यही हमारी ताकत है। हमारे इतिहास का एक सच यह भी है कि जिस दिन महात्मा गांधी की हत्या हुई, उसी दिन पटेल राष्ट्रपिता से मिले थे और नेहरू के साथ रिश्तों के बारे में उनमें लंबी बातचीत हुई थी। इस बातचीत में वे सब गिले-शिकवे धुल गये थे जो तब हवा में तैर रहे थे। उसी शाम नेहरू को भी महात्मा गांधी से मिलना था। काश! वह मीटिंग हो पाती तो बातें और साफ होकर सामने आ जातीं। पर यह नहीं हो पाया। गोडसे उन खतरनाक ताकतों के प्रतिनिधि के रूप में काम कर रहा था जिन्हें उन सपनों से नफरत थी जो गांधी, नेहरू और पटेल स्वतंत्र भारत के लिए देख रहे थे।

आज पटेल और नेहरू को एक-दूसरे के प्रतिस्पर्धी के रूप में सामने रखकर अपने-अपने राजनीतिक स्वार्थ की पूर्ति की कोशिशें हो रही हैं। पटेल को नेहरू-विरोधी बताने वाले यह भी कह रहे हैं कि सरदार नेहरू की तरह मुसलमानों के पक्ष में नहीं थे। वह यह भूल जाते हैं कि तब सरदार पटेल देश के गृहमंत्री थे और इस रूप में अपनी भूमिका के प्रति पूर्णत: सजग थे। आजादी मिलने के तत्काल बाद राजधानी दिल्ली में हुए हिंदू-मुस्लिम दंगों की आग को बुझाने के लिए तब उन्होंने वह सब किया जो किसी भी देशभक्त नेता को करना चाहिए था। आधी रात को दंगइयों के बीच पहुंचे थे सरदार पटेल। उनके लिए देश का हर नागरिक समान था। हर नागरिक की सुरक्षा उनका दायित्व था, कर्तव्य भी।

सेहत है अनमोल

इसके लिए करें ये काम

सेहत, एक ऐसा शब्द है जो हर व्यक्ति के लिए महत्व रखता है। हम सभी जानते हैं कि सेहत हमारे जीवन का आधार है, लेकिन फिर भी इसे अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। आधुनिक जीवन की भागदौड़ में हम अपनी सेहत की अनदेखी कर देते हैं। लेकिन सेहत का मूल्य कितना अनमोल है? सेहत हमें फ्री में मिलती है, लेकिन इसका मोल अनमोल है। यह हमारे जीवन की सबसे बड़ी दौलत है, जिसका संरक्षण और देखभाल करना हमारी जिम्मेदारी है। हम सबको चाहिए कि हम अपनी सेहत की कद्र करें और इसे प्राथमिकता दें। एक स्वस्थ जीवनशैली अपनाकर हम न केवल अपने स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं, बल्कि अपने जीवन को भी खुशहाल और संतोषजनक बना सकते हैं। सेहत केवल शारीरिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है, यह मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को भी समाहित करता है।

व्यायाम

आप नियमित रूप से व्यायाम करना न भूलें। क्योंकि यह शरीर को स्वस्थ्य रखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी है। सेहत का महत्व सभी को समझ में आता है, लेकिन अक्सर हम इसकी अनदेखी करते हैं। काम के दबाव, तनाव, और दैनिक जीवन की भागदौड़ हमें ऐसी आदतें अपनाने पर मजबूर कर देती हैं, जो हमारे स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाती हैं। फास्ट फूड, शारीरिक निष्क्रियता और नींद की कमी जैसी बातें हमारी सेहत पर बुरा असर डालती हैं। एक वयस्क को लगभग 7-8 घंटे की नींद लेनी चाहिए।

चिकित्सकीय जांच

स्वास्थ्य की देखभाल में नियमित चिकित्सकीय जांच भी महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम स्वस्थ हैं, हमें समय-समय पर स्वास्थ्य जांच करवानी चाहिए। इसके माध्यम से हम किसी भी स्वास्थ्य समस्या को समय पर पहचान सकते हैं। क्योंकि परिवार का भी सेहत पर गहरा असर होता है। एक स्वस्थ परिवार ही स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देता है। परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर स्वस्थ खाने की आदतें अपनाएं और एक-दूसरे को प्रेरित करें। यह न केवल स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है, बल्कि पारिवारिक संबंधों को भी मजबूत करता है।

शिक्षा और जागरूकता

सेहत के महत्व को समझने के लिए शिक्षा और जागरूकता आवश्यक है। स्कूलों और कॉलेजों में स्वास्थ्य शिक्षा को शामिल करना चाहिए। लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम और कार्यशालाएं आयोजित की जानी चाहिए।

मानसिक स्वास्थ्य की अहमियत

सेहत का एक महत्वपूर्ण पहलू मानसिक स्वास्थ्य है। मानसिक स्वास्थ्य को नजरअंदाज करना शारीरिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर सकता है। आज के दौर में, मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं जैसे अवसाद और चिंता सामान्य होती जा रही हैं। इसलिए, हमें अपने मानसिक स्वास्थ्य का भी ख्याल रखना चाहिए। ध्यान, योग और अन्य तनाव प्रबंधन तकनीकों का उपयोग करें। यह मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करता है।

संतुलित आहार

ताजे फल, सब्जियां, साबुत अनाज और प्रोटीन का सेवन करें। जंक फूड से दूर रहें। क्योंकि जब हम अपनी सेहत को खोते हैं, तो हमें समझ में आता है कि यह कितना कीमती था। चिकित्सकीय खर्च, मानसिक तनाव, और जीवन की गुणवत्ता में कमी हमें यह एहसास कराती है कि सेहत का मोल अनमोल है। हमें यह समझना चाहिए कि स्वास्थ्य को बनाए रखना एक निवेश है, जिसका लाभ दीर्घकालिक होता है।

प्रौद्योगिकी का उपयोग

आज की डिजिटल दुनिया में, स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए विभिन्न ऐप्स और तकनीकें उपलब्ध हैं। आप फिटनेस ट्रैकर्स का उपयोग कर सकते हैं जो आपकी गतिविधियों को मॉनिटर करते हैं। इसके अलावा, हेल्थ ऐप्स आपकी डाइट और व्यायाम को ट्रैक करने में मदद कर सकते हैं।

हंसना मना है

डॉक्टर के पास पहुंचा गप्पू, डॉक्टर ने गप्पू की टेस्ट रिपोर्ट देख कहा- आपकी एक किडनी फेल हो गई है, गप्पू रोने लगा, और कुछ देर बाद आंसू पोंछते हुए बोला-ये तो बता दीजिए डॉक्टर साहब कि मेरी किडनी आखिर कितने नंबर से फेल हुई है?

डाकू (संता से) - हम घर लूटने आए हैं, लेकिन बंदूक घर पर ही भूल गए हैं, संता- कोई बात नहीं, आप लोग शरीफ आदमी लगते हो, आज घर लूट लो कल आकर बंदूक जरूर दिखा जाना।

लड़की वाले बेटी के लिए लड़का देखने गए। लड़की वाले- कितना कमा लेते हो? लड़का- इस महीने दो करोड़ कमाया। लड़की वाले- फिर क्या हुआ? लड़का- बस, फिर मोबाइल में तीन पत्ती हैंग हो गया और सारी कमाई चली गई।

बच्चे के पेपर में 0 आया। गुस्से से पिता- यह क्या है? बच्चा- पिताजी, शिक्षक के पास स्टार खत्म हो हो गए थे, इसलिये उसने मून दे दिया।

पत्नी- उठो सुबह हो गई, पति- आंख नहीं खुल रही है, ऐसा कुछ बोलो कि नींद गायब हो जाए। पत्नी- रात में जिस जानू से चैट कर रहे थे, वो मेरी दूसरी ID है। अब बेचारे पति को 3 दिन से नींद नहीं आ रही है।

कहानी | मेंढक और बैल

बहुत पुरानी बात है। किसी घने जंगल में एक तालाब था, जिसमें ढेर सारे मेंढक रहते थे। उन्हीं में एक मेंढक अपने तीन बच्चों के साथ रहता था। वो सभी तालाब में ही रहते और खाते-पीते थे। उस मेंढ़क की सेहत अच्छी-खासी हो चुकी थी और वो उस तालाब में सबसे बड़ा मेंढ़क बन चुका था। उसके बच्चे उसे देखकर काफी खुश होते थे। उसके बच्चों को लगता कि उनके पिता ही दुनिया में सबसे बड़े और बलवान हैं। मेंढ़क भी अपने बच्चों को अपने बारे में झूठी कहानियां सुनाता और उनके सामने शक्तिशाली होने का दिखावा करता था। उस मेंढ़क को अपने शारीरिक कद-काठी पर बहुत घमंड था। ऐसे ही दिन बीतते गए। एक दिन मेंढ़क के बच्चे खेलते-खेलते तालाब से बाहर चले गए। वो पास के एक गांव पहुंचे। वहां उन्होंने एक बैल को देखा और उसे देखते ही उनकी आंखें खुली की खुली रह गईं। उन्होंने कभी इतना बड़ा जानवर नहीं देखा था। वो बैल को देखकर डर गए और बहुत ज्यादा हैरान हो गए। वो बैल को देखे जा रहे थे और बैल मजे से घास खा रहा था। घास खाते-खाते बैल ने जोर से हुंकार लगाई। बस फिर क्या था, मेंढ़क के तीनों बच्चे डर के मारे भागकर तालाब में अपने पिता के पास आ गए। पिता ने उनके डर का कारण पूछा। उन तीनों ने पिता को बताया कि उन्होंने उनसे भी विशाल और ताकतवर जीव को देखा है। उन्हें लगता है वो दुनिया का सबसे बड़ा और शक्तिशाली जीव है। यह सुनते ही मेंढ़क के अहंकार को ठेस पहुंची। उसने एक लंबी सांस भरकर खुद को फुला लिया और कहा कि क्या वो उससे भी बड़ा जीव था? उसके बच्चों ने कहा कि हां, वो तो आप से भी बड़ा जीव था।' मेंढ़क को गुस्सा आ गया, उसने और ज्यादा सांस भरकर खुद को फुलाया और पूछा कि क्या अब भी वो जीव बड़ा था? बच्चों ने कहा कि ये तो कुछ भी नहीं, वो आपसे कई गुना बड़ा था। मेंढ़क से यह सुना नहीं गया, वह सांस फुला-फुलाकर खुद को गुब्बारे की तरह फुलाता चला गया। फिर एक वक्त आया जब उसका शरीर पूरी तरह फुल गया और वो फट गया और अहंकार के चक्कर में अपनी जान से हाथ धो बैठा।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष व्यवसाय ठीक चलेगा। आय बनी रहेगी। पुराना रोग उभर सकता है। अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे। कर्ज लेना पड़ सकता है। किसी व्यक्ति से कहासुनी हो सकती है।

वृषभ बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। व्यावसायिक यात्रा लाभदायक रहेगी। भाग्य का साथ मिलेगा। नौकरी में चैन रहेगा। निवेश शुभ रहेगा। घर-बाहर प्रसन्नता रहेगी।

मिथुन कार्यप्रणाली में सुधार होगा। सामाजिक काम करने की इच्छा रहेगी। मान-सम्मान मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय लाभदायक रहेगा। तत्काल लाभ नहीं मिलेगा।

कर्क मानसिक शांति रहेगी। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। समय अनुकूल है। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। कारोबार में वृद्धि के योग हैं। शारीरिक कष्ट संभव है।

सिंह आज कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय सोच-समझकर करें। व्यापार अच्छा चलेगा। नौकरी में मातहतों से कहासुनी हो सकती है। लेन-देन में सावधानी रखें।

कन्या धन प्राप्ति सुगम होगी। घर-बाहर प्रसन्नता रहेगी। भाइयों का सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य हो सकता है। लेन-देन में सावधानी रखें। चिंता तथा तनाव रहेंगे।

तुला धनलाभ के अवसर हाथ आएंगे। भूमि व भवन संबंधी बाधा दूर होगी। बड़ा लाभ हो सकता है। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। शेयर मार्केट से लाभ होगा।

वृश्चिक किसी वरिष्ठ प्रबुद्ध व्यक्ति का मार्गदर्शन व सहयोग प्राप्त होगा। व्यापार से लाभ होगा। किसी मांगलिक कार्य में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा।

धनु कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। दुःखद समाचार प्राप्त हो सकता है। भागदौड़ अधिक रहेगी। थकान व कमजोरी महसूस होगी। आय में निश्चितता रहेगी।

मकर आज नौकरी में आपकी प्रशंसा होगी। कार्यसिद्धि होगी। प्रसन्नता रहेगी। प्रयास सफल रहेंगे। सामाजिक कार्यों में रुचि रहेगी। मान-सम्मान मिलेगा। चोट व रोग से बचें।

कुम्भ दूर से शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी। घर में मेहमानों का आगमन होगा। कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। आत्मविश्वास बढ़ेगा। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे।

मीन व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। निवेश शुभ रहेगा। व्यापार मनोनुकूल लाभ देगा। किसी बड़ी समस्या से मुक्ति मिल सकती है।

बॉलीवुड | मन की बात

मैं बचपन से माधुरी दीक्षित बनना चाहती थी : विद्या

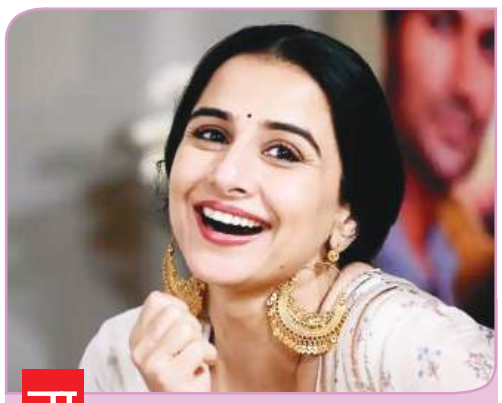

हाल ही में फिल्म 'भूल भुलैया 3' में नजर आने वाली अभिनेत्री विद्या बालन ने एक समय 'जूनियर माधुरी दीक्षित' बनने की इच्छा व्यक्त की थी। एक पुराने इंटरव्यू में विद्या बालन ने बताया था कि कैसे 'तेजाब' में माधुरी की भूमिका ने एक किशोर लड़की के रूप में उन पर अविस्मरणीय छाप छोड़ी। उन्होंने स्वीकार किया कि माधुरी जैसा बनने का सपना उनकी तरह शायद अनगिनत लड़कियों ने देखा होगा। वर्तमान में सोशल मीडिया पर प्रसारित एक वीडियो में 'शकुंतला देवी' अभिनेत्री कहती हैं, मैं सातवीं कक्षा में थी जब मुझे लगा कि मुझे एक अभिनेत्री बनना चाहिए। मुझे नहीं पता कि यह सही था या गलत लेकिन मैं 'तेजाब' में माधुरी दीक्षित की अदाकारी से बहुत प्रेरित थी। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि यह फिल्म इतनी अच्छी है कि देश में बहुत से लोग माधुरी की तरह बनना चाहते होंगे। हालांकि मैं उनकी तरह नहीं बन सकी, लेकिन भगवान की कृपा से कम से कम मुझे फिल्मों में काम करने का अपना सपना पूरा करने का मौका मिला।

एन. चंद्रा द्वारा निर्देशित 'तेजाब' फिल्म ने माधुरी दीक्षित को रातों-रात स्टार बना दिया। साल 1988 में रिलीज इस एक्शन रोमांस ड्रामा में अनिल कपूर उनके साथ मुख्य भूमिका में थे। दिलचस्प बात यह है कि विद्या बालन ने हाल ही में अनीस बज्मी की हॉरर-कॉमेडी 'भूल भुलैया 3' में माधुरी के साथ स्क्रीन शेयर किया है। फिल्म में बालन ने भूतिया नर्तकी मंजुलिका के रूप में अपनी प्रतिष्ठित भूमिका को दोहराया, जबकि माधुरी ने मंदिरा की भूमिका निभाई। मंदिरा और मल्लिका फिल्म में मंजुलिका और अंजुलिका का पुनर्जन्म हैं। 'भूल भुलैया 3' फ्रेंचाइजी की तीसरी फिल्म है। साल 2007 में रिलीज मूल फिल्म में अक्षय कुमार और विद्या बालन ने अभिनय किया था, जबकि 'भूल भुलैया 2' में कार्तिक आर्यन, कियारा आडवाणी और तब्बू नजर आईं। 'भूल भुलैया 3' में संजय मिश्रा, तृप्ति डिमरी और राजपाल यादव भी हैं।

रास नहीं आयीं महारानी को दो बड़ी फिल्में

हुमा कुरैशी ने हाल ही में दो मुख्य भूमिकाओं वाली फिल्म को अस्वीकार करने के पीछे का कारण का खुलासा किया। उन्होंने बताया कि इन फिल्मों के लिए उन्हें उच्च वेतन की पेशकश नहीं की गई थी। इसके साथ ही इन फिल्मों में उनके साथ काम करने वाले दूसरे अभिनेताओं में अनुभव की कमी के कारण उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया। उन्होंने बताया कि अगर कोई अभिनेता अपने सोशल मीडिया फॉलोइंग के कारण लोकप्रिय माना जाता है, इसका यह मतलब नहीं कि उसके शो या फिल्मों को दर्शक पसंद करेंगे।

मुख्य भूमिका वाली फिल्मों को करने से किया इनकार

हुमा ने स्पष्ट किया कि वह फिल्मों में काम करने के लिए तैयार हैं, लेकिन तभी जब फिल्मों में अन्य अभिनेताओं की तरह उनके किरदार को भी समान महत्व दिया जाए। उन्होंने आगे कहा कि करियर के इस स्तर पर उन्हें नहीं लगता कि कोई समझौता करने की जरूरत है। टीम ने उन्हें आश्वासन दिया कि यह दो मुख्य भूमिका वाली फिल्म है, हुमा ने स्पष्ट किया कि एक वरिष्ठ अभिनेता के रूप में उन्हें उच्च वेतन की उम्मीद है। जब टीम के साथ कोई समझौता नहीं हुआ तब उन्होंने दोनों फिल्मों को करने से इनकार कर दिया। जॉली एलएलबी 2 की अभिनेत्री ने कहा, उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि दोनों मुख्य भूमिका वाली फिल्में हैं, लेकिन एक वरिष्ठ अभिनेत्री के तौर पर मैंने उच्च वेतन की मांग की थी। हमारे बीच बात नहीं बनी और मैंने काम करने से इनकार कर दिया।

दो फिल्मों को न कहने का बताया कारण

एक मीडिया साक्षात्कार में हुमा कुरैशी ने दो नई फिल्मों को न कहने के पीछे के कारमों पर खुलकर बात की। उन्होंने कहा कि ईमानदारी महत्वपूर्ण है। अन्य अभिनेताओं की लोकप्रियता के बावजूद उन्हें लगता है कि स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर उनका अनुभव अन्य अभिनेताओं के अनुभव से मेल नहीं खाता है। उन्होंने कहा, बिना नाम बताए, मुझे दो लीड फिल्मों की पेशकश की गई थी। मैंने उसे स्वीकार नहीं किया, क्योंकि इसमें शामिल अन्य मशहूर अभिनेताओं के पास स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म का मेरे जितना अनुभव नहीं था। हुमा कुरैशी ने बताया कि वह इन परिस्थितियों का सामना ईमानदारी और सम्मान के साथ करती हैं। उन्होंने हुमा ने कहा कि उन्हें जिन फिल्मों की पेशकश की गई वह ओटीटी के लिए थीं, जहां उन्होंने बहुत नाम कमाया।

निया शर्मा का छलका दर्द, बोलीं- मेरा कोई बॉयफ्रेंड नहीं है तो क्या सिंगल ही मर जाएंगे

टीवी की टैलेंटेड एक्ट्रेस निया शर्मा ने अपने रिलेशनशिप स्टेटस और शादी की अपनी प्लानिंग के बारे में बात की है। उन्होंने बताया कि वह सिंगल हैं और खुद से सवाल किया कि क्या वो शादी के बिना कुछ मिस कर रही हैं?

निया ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'इंस्टाग्राम' पर अपने फैंस और फॉलोअर्स के साथ एक सवाल-जवाब सेशन किया, जहां एक यूजर ने उनसे पूछा कि क्या उनका कोई बॉयफ्रेंड है? उन्होंने जवाब दिया, 'नहीं मेरा कोई बॉयफ्रेंड नहीं है तो क्या सिंगल ही मर जाएंगे। मुझसे कोई प्यार नहीं करता'। इसी सेशन में एक अन्य ने उनसे उनकी शादी की प्लानिंग के बारे में पूछा, जिस पर उन्होंने कहा, सर मैं आपको खुश नहीं दिखाई देती क्या या आपको बर्दाश्त नहीं होता कि मैं अपनी लाइफ में खुश हूं? मेरी जिंदगी में कुछ कमी दिखाई देती है या फिर मैं उस लेवल तक नहीं जी पा रही हूं ऐसा क्या है जो मैं शादी के बिना मिस कर रही हूं।'

इसके बाद निया ने अपने फैन्स को वजन घटाने के मजेदार टिप्स दिए, जिन्होंने उनसे पूछा था कि उनके जैसी अच्छी बॉडी कैसे हासिल की जाए. उन्होंने इसका जवाब दिया, 'जब भी आपका खाने का मन हो। बस अपने मुंह पर टेप लगा लें। एक्ट्रेस को उनके ड्रेसिंग स्टाइल के लिए तारीफ मिली तो उन्होंने कहा, 'यही मैं भी सोचती हूं लेकिन फिर लोग मेरे पीछे क्यों आते हैं?' डार्क सर्कल हटाने के टिप्स पूछने वालों को एक मजेदार जवाब देते हुए एक्ट्रेस ने कहा 'यह सवाल मैं सभी से पूछ रही हूं, जो भी सबसे अच्छी टिप्स लेकर आएगा, उसे मेरी तरफ से ढेर सारा आशीर्वाद मिलेगा।'

अजब-गजब | शायद ही कोई बता पायेगा इस गांव का नाम

इंडिया में ही है एशिया का सबसे अमीर गांव

सामान्य ज्ञान का दायरा इतना बड़ा है कि हम कितना भी पढ़ लें, कम ही लगता है। सामान्य ज्ञान में जहां एक ओर देश-विदेश की जानकारी होती है, वहीं साहित्य, विज्ञान, इतिहास, भूगोल जैसे विषय भी शामिल होते हैं।

ये सभी सामान्य ज्ञान प्रतियोगी परीक्षाओं में तुरुप के इक्के की तरह काम करता है। परीक्षा से लेकर नौकरी के साक्षात्कार तक, हर जगह पर जनरल नॉलेज की जरूरत पड़ती ही है। ऐसी ही जानकारी हम आपको देने जा रहे हैं, जो है तो हमारे ही देश से संबंधित लेकिन ज्यादातर लोगों को पता नहीं होगी। जब भी हम पर्यटन के बारे में सोचते हैं तो विदेश यात्रा के बारे में सोचते हैं, तो उन जगहों पर कई नई-नई जानकारियां मिलती हैं जो हमें हैरान कर देती हैं। अगर बात गांवों की करें तो पहली सोच यही होती है कि यहां रहने वाले लोग आर्थिक रूप से सशक्त नहीं होते हैं। हालांकि आप जानकर दंग रह जाएंगे कि भारत का एक गांव ऐसा है, जो एशिया में सबसे अमीर है।

एशिया के सबसे अमीर गांव के रूप में भारत के गुजरात राज्य में मौजूद कच्छ जिले का मदापार गांव लिस्ट किया गया है। इस गाँव में लगभग 17 बैंक हैं जो 7,600 परिवारों को सेवा देते हैं। इन बैंकों में ग्रामीणों ने इतना पैसा जमा किया है कि ये एशिया का सबसे अमीर गांव बन गया। ग्रामीणों ने लगभग 7,000 करोड़ रुपये बैंक में जमा किए हैं, ये लोग पर्याप्त धन

बचाने और निवेश करने के लिए भी जाने जाते हैं। इससे भी दिलचस्प बात यह है कि इस छोटे से गांव के कई लोग इस समय विदेश में रहते हैं। ऐसे में वे वहां जो पैसा कमाते हैं उसका एक बड़ा हिस्सा गांव के ही बैंक में जमा करते हैं।

गांव में ज्यादातर लोगों ने पहले ही करीब 22 लाख रुपये फिक्स्ड डिपॉजिट में जमा कर रखे हैं। ग्रामीण आर्थिक रूप से स्वतंत्र और सुरक्षित बनने पर खूब ध्यान देते हैं और यही कारण है कि वे कई सालों में इतना पैसा बचा चुके हैं। मदापार गांव की समृद्धि का एक बड़ा कारण यहां के अप्रवासी भारतीय हैं, जो ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, ब्रिटेन और अफ्रीकी देशों में चले गए हैं।

इनमें से लगभग सभी एनआरआई या अप्रवासी अलग-अलग नौकरियों, निर्माण सेक्टर और बिजनेस में शामिल हैं। अपनी मातृभूमि से बहुत दूर रहने के बावजूद, वे नियमित रूप से पर्याप्त मात्रा में धन अपने गांव भेजते हैं। वे स्थानीय बैंकों और डाकघरों में पैसा भेजते हैं और उनकी इस आदत ने पूरे गांव की संपत्ति को बढ़ाने में मदद की है। इस गांव में फिलहाल एक्सिस, एचडीएफसी जैसे 17 बैंक हैं। इस बड़ी धनराशि से गांव की बुनियादी जरूरतों के विकास में भी काफी मदद मिली है। अन्य गांवों के विपरीत, मदापार में अच्छी सड़कें, साफ पानी, पार्क और साफ-सफाई है। स्कूल, मंदिर और कम्युनिटी प्लेसेज ने ग्रामीणों की जिंदगी को आसान और बेहतर बनाया है।

इस देश में खाया जाता है सबसे ज्यादा चावल, दूसरे नंबर पर है भारत

यूपी-बिहार के लोगों को चावल बहुत पसंद है। लेकिन देश के कई राज्यों में लोग ज्यादा चावल खाना पसंद नहीं करते हैं। कुछ लोग तो ऐसे भी होते हैं, जो बिना चावल के रह ही नहीं पाते हैं। गांवों में तो आज भी लोग दिन में तीन बार चावल खाते हैं। सुबह के नास्ते से लेकर दोपहर के लंच तक और रात के डिनर तक में उनके चावल शामिल होता है। घर पर होंगे तो चावल खाना ही है। लेकिन चावल पसंद करने वाले लोग किसी समारोह में भी जाते हैं, तो वहां पर चावल या पुलाव की तलाश करने लगते हैं। जैसे ही उनकी नजर इस डिश पर पड़ती है, वो अच्छे-अच्छे पकवान को छोड़कर चावल खाने के लिए टूट पड़ते हैं। ऐसे में अगर आप आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु में गए और आपके पास गर्म चावल-दाल नहीं है, तो आपको चावल सांबर जैसा कुछ कॉम्बो खाना होगा। यहां तक कि जिन लोगों ने बाहर खाना खाया है, वे भी कई जगहों पर, यहां तक कि होटलों में भी चावल मिलने का इंतजार करते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि किस देश के लोग सबसे ज्यादा चावल खाते हैं?

अगर आपका उत्तर भारत है तो आपको बता दें कि आप गलत हैं। फिर कौन सा देश है, जहां के लोग भारत के लोगों से भी ज्यादा चावल खाते हैं? चावल खाने के मामले में सबसे टॉप पर चीन है। यानी चीन ही वो देश है, जहां के लोग दुनिया में सबसे ज्यादा चावल खाते हैं। विश्व का लगभग 30 प्रतिशत चावल चीन में उत्पादित होता है और खपत भी सबसे ज्यादा यहीं होता है। चावल खाने के मामले में चीन के बाद भारत दूसरे स्थान पर है। यानी कि दुनिया में दूसरा सबसे ज्यादा चावल खाने वाला देश भारत है। उसके बाद तीसरे स्थान पर इंडोनेशिया है। टॉप 3 चावल खाने वाले देशों के बारे में तो जान गए। लेकिन इस सूची में अगला स्थान बांग्लादेश का है। बांग्लादेश दुनिया का चौथा सबसे ज्यादा चावल खाने वाला देश है। इसके बाद वियतनाम, फिलीपींस और थाईलैंड हैं।

भाजपा की नीतियों से तंग आ चुके हैं लोग : पायलट

बीजेपी कर रही केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग

» बोले- भाजपा का ग्राफ गिर रहा है, महाराष्ट्र-झारखंड में बनेगी गठबंधन की सरकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। मध्य प्रदेश में उपचुनाव के बीच कांग्रेस नेता सचिन पायलट ने भाजपा पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि अनुकूलता कम हो रही है, लोग इसकी नीतियों और एजेंसियों के दुरुपयोग से तंग आ चुके हैं। देश भर में भाजपा का ग्राफ गिर रहा है। महाराष्ट्र और झारखंड के विधानसभा चुनाव में भी इंडिया गठबंधन ही जीतेगा। कांग्रेस नेता ने कहा- मैं जमशेदपुर (झारखंड) गया हूं, वहां हमारी एकतरफा लहर चल रही है।

बता दें कि पायलट राजस्थान की सीमा से लगे श्योपुर जिले के विजयपुर विधानसभा क्षेत्र में 13 नवंबर को होने वाले उपचुनाव में कांग्रेस के लिए प्रचार करने के लिए पहुंचे थे। पायलट ने लोकसभा चुनाव के दौरान भाजपा नेताओं द्वारा की गई मंगल सूत्र छीनने और हाल ही में बटेंगे तो कटेंगे जैसी टिप्पणियों को लेकर भी हमला बोला। उन्होंने भाजपा नेताओं पर चुनाव के दौरान निम्न-स्तरीय भाषा का इस्तेमाल करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा, कांग्रेस का ध्यान पढ़ेंगे तो बढ़ेंगे जैसे सकारात्मकता वाले नारे देने पर है। इस प्रकार की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। देश में लोग अब सत्ता और केंद्रीय एजेंसियों के दुरुपयोग और ध्रुवीकरण को लेकर भाजपा से तंग आ चुके हैं। पायलट ने दो मुख्यमंत्रियों- झारखंड के हेमंत सोरेन और दिल्ली के अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी पर भी भाजपा की आलोचना की।

भाजपा पर राजनीतिक लाभ के लिए केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग करने का आरोप लगाया। पायलट ने कहा- कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, वर्तमान अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और विपक्षी दल इंडिया ब्लॉक के नेता देश को मजबूत करने की दिशा में काम कर रहे हैं। मप्र में उपचुनाव के नतीजे 2028 के विधानसभा चुनाव में अपनी छाप छोड़ेंगे।

जनता से अधिकारियों ने की वसूली : दिग्विजय

बुधनी उपचुनाव को लेकर आरोप-प्रत्यारोप का दौर जारी है। भाजपा की ओर से सीएम मोहन यादव और कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने निशाना साधा तो कांग्रेस की ओर से पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने मैदान संभाला। उन्होंने कहा कि एक व्हाइट हाउस अमेरिका के राष्ट्रपति का है तो दूसरा बुधनी से भाजपा प्रत्याशी रमाकांत भार्गव का शाहगंज में है। किसी ने इस हाउस का वैभव देखा है क्या? बुधनी के इस चुनाव में आप लोगों के सामने दो प्रत्याशी आमने-सामने हैं। एक राजकुमार पटेल जो सुख-दुःख का साथी है तो दूसरा रमाकांत भार्गव जो जीतने के बाद वापस नहीं लौटता है। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले 20 वर्षों से शिवराज सिंह यहां से चुनाव जीते और प्रदेश के मुख्यमंत्री भी रहे लेकिन इस क्षेत्र की समस्याएं खत्म नही हो सकी। यहां पर भ्रष्टाचार का बोलबाला रहा। 20 वर्षों में किसी एक भ्रष्टाचारी अधिकारी या कर्मचारी पर कार्यवाही हुई हो तो बताएं।

हत्या के आरोपी भाजपा नेता ने पीड़ित परिवार को दी जान से मारने की धमकी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

दोस्तपुर। गोसैसिंहपुर के अंडा व्यवसायी संतराम अग्रहरि की हत्या के मामले में दोस्तपुर पुलिस ने अब तक नौ को जेल की राह पकड़ाई है, लेकिन इसी मामले में नामजद आरोपी अर्जुन पटेल अभी तक पुलिस की पकड़ दे दूर है। अर्जुन पटेल का इन दिनों एक वीडियो वायरल हो रहा है, यह वीडियो घटना के दो दिन पहले का बताया जा रहा है, जब अर्जुन अपने घर खेमपुर आया हुआ था और मृतक का चचेरा भाई अखिलेश उसी रास्ते से किसी काम के लिए जा रहा था, तो भाजपा नेता ने उसे रोककर खुलेआम धमकी दी।

वीडियो में अर्जुन साफ धमकी देता हुआ कह रहा है कि तुम बीच में मत आओ मेरे पास 200 लड़के हैं, मार देंगे, अभी दो अज्ञात का नाम दर्ज है तुम्हारा भी नाम आ सकता है, यही झगड़ा अगर मुझसे होता तो थाने में बैठवाकर तुमको मरवाता, जुबान बंद रखो नहीं तो चीर दूंगा, मेरे साथ पढ़े हो इसलिए छोड़ रहा हूं। वहीं इसी मामले में मृतक व्यापारी के परिजनों ने पुलिस अधीक्षक को सम्बोधित पत्र ने माध्यम से इसकी गिरफ्तारी की मांग करते हुए आरोप लगाया कि वह खुलेआम घूम रहा है और सोशल मीडिया पर भी जम कर सक्रिय है, ऐसे में पुलिस क्यों नहीं उसे पकड़ पा रही। दूसरी तरफ थाना प्रभारी पंडित त्रिपाठी ने बताया कि अर्जुन पटेल की गिरफ्तारी के लिए लगातार दबिश दी जा रही है, उसके खिलाफ कठोरतम कार्यवाही की जाएगी साथ ही न्यायालय से भी उसके खिलाफ कुर्की की कार्यवाही की प्रक्रिया शुरू करने का प्रयास किया जा रहा है।

बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों से किया मंत्रमुग्ध

» लखनऊ पब्लिक कॉलेज आम्रपाली योजना में वार्षिकोत्सव संपन्न

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। पब्लिक कॉलेज, सेक्टर-ई, आम्रपाली योजना में वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। इस वर्ष यह शाखा अपने एक दशक का जश्न मना रहा है। संस्थापक अध्यक्ष एवं सांसद-डॉ. एस. पी. सिंह सर, प्रशासनिक प्रमुख कांति सिंह, और सम्मानित निदेशक नेहा सिंह ने अपनी सौम्य उपस्थिति से इस अवसर की शोभा बढ़ाई। विद्यालय प्रबंधन एवं अन्य सम्मानित महानुभावों का स्वागत लघु पौधा भेंट कर किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्वलन से हुई।

यह संगीत कार्यक्रम दस वर्षों की यात्रा में अर्जित सभी उपलब्धियों की थीम पर आधारित था। कार्यक्रमों में दस की संख्या को दर्शाने वाली घटनाओं को दर्शाया गया। गायक मंडली ने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करने वाले दस मधुर गीत गाए। युवराज सिंह ने भी गायन मंडली द्वारा गाए गए काव्यात्मक अंदाज में कॉलेज की उपलब्धियों और सम्मान का वर्णन करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। प्राइमरी स्तर के बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम में एक नाटक के रूप में दस नैतिक मूल्यों को दिखाया गया जहां ईमानदारी, समर्पण, कड़ी मेहनत, वैश्विक शांति और विविधता में एकता के महत्व को प्रदर्शित किया।

हिम्मत है तो सामने से लड़े भाजपा : सोरेन

» बोले- मेरी छवि बिगाड़ने में खर्च कर दिए अरबों रुपये

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रांची। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने भाजपा पर जोरदार प्रहार किया। उन्होंने कहा कि वह आगामी राज्य के चुनावी मुकाबले में कायर अंग्रेजों की तरह पीछे से हमला करने के बजाय उनसे सीधे मुकाबला करे। मुख्यमंत्री ने एक्स पर निशाना साधते हुए कहा, अगर हिम्मत है तो सामने से लड़ो- कायर अंग्रेजों की तरह लगातार पीछे से वार क्यों? कभी ईडी, कभी सीबीआई, कभी कोई एजेंसी, कभी कोई और। अब अरबों रुपये खर्च कर दिए मेरी छवि बिगाड़ने में। अजब हालात है।

उन्होंने कहा कि 11 साल से केंद्र में भाजपा की सरकार है, पांच साल राज्य में रही। खुद को डबल इंजन सरकार बोलती रही। फिर रघुबर सरकार के पांच साल सिर्फ हाथी क्यों उड़ी? क्यों पांच सालों में 13000 स्कूल बंद किए? क्यों पांच साल में 11 लाख- जी हां 11 लाख राशन कार्ड कैंसिल किए? क्यों पांच साल में 1 जेपीएससी परीक्षा नहीं हुई? क्यों पांच साल में वृद्धा-विधवा पेंशन नहीं बढ़ा और ना मिला? क्यों पांच साल में राज्य में भूख से सैंकड़ों मौतें हुई? उन्होंने आगे सवाल किए कि क्यों पांच साल में युवाओं को साइकिल बनाने, केला बेचने की सलाह दी गई? क्यों सरकारी कर्मियों को ओल्ड पेंशन स्कीम नहीं दी गई? क्यों झारखंड की बिजली बांग्लादेश में बेची गई? क्यों सेविका, सहिया, पारा शिक्षकों पर लगातार लाठियां बरसायी गईं? क्यों बच्चियों की पढ़ाई के लिए कोई योजना नहीं लाई गई? क्यों बहनों के लिए मंईयां सम्मान योजना नहीं लाई गई? क्यों लगातार बिजली बिल बढ़ाया गया? ऐसे अनगिनत सवाल हैं।

हम सीधे मुकाबला करने में विश्वास करते हैं : भाजपा

भाजपा प्रवक्ता प्रतुल शाह देव ने पलटवार करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री देश के इतिहास की सबसे भ्रष्ट सरकार का नेतृत्व कर रहे हैं। उनके खिलाफ 70,000 करोड़ रुपये के घोटाले के आरोप हैं। अगर आप अपना नामांकन रद्द करवाना चाहते थे, तो हमारे पास एक अच्छा मामला था। आपकी उम्मीदवारी के प्रस्तावक मंडल मुर्मू, महान स्वतंत्रता सेनानी सिद्धू कर्मू के वंशज भाजपा में शामिल हो गए थे। हम तकनीकी आधार पर चुनाव आयोग के पास जा सकते थे, लेकिन हमने ऐसा नहीं किया। हम आपसे सीधे मुकाबला करने में विश्वास करते हैं। आपका शासन हमारी सरकार में जो कुछ भी गलत हो सकता है, उसका प्रतीक है। इसलिए हमें कुछ करने की जरूरत नहीं है।

अफ्रीका में चमक बिखेरने को तैयार सूर्या के सितारे

» दोनों टीमों के बीच पहला टी-20 मैच आज

» अभिषेक-संजू समेत कई खिलाड़ियों पर रहेगी नजर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

डरबन। भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच शुक्रवार से चार मैचों की टी20 सीरीज का आगाज होगा। डरबन में खेले जाने वाले इस मैच में कप्तान सूर्या के नेतृत्व में भारतीय युवा सितारे अपनी चमक बिखेरने को तैयार हैं।

इस सीरीज में संजू सैमसन और अभिषेक शर्मा समेत कई खिलाड़ियों पर नजरें रहेंगी। विकेटकीपर बल्लेबाज सैमसन को हाल ही में बांग्लादेश के खिलाफ घरेलू टी20 सीरीज में पारी का आगाज करने का मौका मिला था और उन्होंने 47 गेंद पर 111 रन की पारी खेल कर टीम प्रबंधन के फैसले को सही साबित किया था। रोहित शर्मा टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले चुके हैं और ऐसे में सैमसन दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ कुछ अच्छी पारियां खेल कर इस प्रारूप में भारतीय शीर्ष क्रम में अपनी जगह पक्की करने की कोशिश करेंगे। वहीं अभिषेक शर्मा के लिए भी यह सीरीज बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि जिम्बाब्वे के खिलाफ जुलाई में हरारे में आकर्षक शतक बनाने के बाद वह रन बनाने के लिए जूझते रहे हैं। वह बाएं हाथ के स्पिन गेंदबाज के रूप में भी बेहतर प्रदर्शन करना चाहेंगे। इसी तरह की स्थिति तिलक वर्मा की है। बाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने वेस्टइंडीज के खिलाफ डेब्यू करते हुए अपने प्रदर्शन से प्रभाव छोड़ा था लेकिन इसके बाद वह अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर पाए। वह अपनी ऑफ स्पिन का भी बेहतर इस्तेमाल करना चाहेंगे। विकेटकीपर बल्लेबाज जितेश शर्मा और स्पिनर वरुण चक्रवर्ती के लिए भी यह अच्छा मौका होगा।

इन पर होगी बड़ी जिम्मेदारी

टीम के सीनियर खिलाड़ी जैसे कप्तान सूर्यकुमार यादव, ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या और अक्षर पटेल भी दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ सीरीज को यादगार बनाने की कोशिश करेंगे। वहीं अर्शदीप सिंह आवेश खान पर भी तेज गेंदबाजी आक्रमण की जिम्मेदारी रहेगी। क्योंकि उन्हें अंतरराष्ट्रीय मैचों का अनुभव है। जहां तक दक्षिण अफ्रीका का सवाल है तो उसकी टीम जून में टी20 विश्व कप के फाइनल में भारत के हाथों मिली हार का बदला चुकता करने के लिए बेताब होगी।

छठ के बहाने नेताओं ने दिखाई सियासी ताकत!

दिल्ली में केजरीवाल, यूपी में योगी व बिहार में नीतीश व नड्डा पहुंचे लोगों के बीच, लोक आस्था का पर्व छठ उदीयमान सूर्य को अर्घ्य के साथ ही संपन्न

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लोक आस्था का पर्व छठ शुक्रवार की सुबह उदीयमान सूर्य को अर्घ्य के साथ ही संपन्न हो गया। चार दिनों तक चले इस अनुष्ठान के दौरान राजनीति भी खूब हुयी और दावे प्रतिदावे भी। भाजपा सांसद मनोज तिवारी की पत्नी ने दिल्ली में भगवान भुवन भास्कर को अर्घ्य अर्पित किया और अरविंद केजरीवाल पर निशाना साधते से नहीं चूकीं । उन्होंने कहा कि सिर्फ दिल्ली में ही एक दंश झेलने को मिल रहा है। यहां की सरकार छठ रोकने में लगी हुई है।

छठ पूजा में पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया भी शामिल हुए। उन्होंने छठी मईया की पूजा-अर्चना करके आशीर्वाद लिया। अरविंद केजरीवाल दिल्ली के ईस्ट किदवई नगर में पहुंचे थे। दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया पूर्वी

दिल्ली के पटपड़गंज विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत वेस्ट विनोद नगर के राजेंद्र पार्क के छठ घाट पर पूजा के लिए पहुंचे। छठ महापर्व के पावन अवसर पर गोरखपुर के सांसद और प्रसिद्ध अभिनेता रवि किशन शुक्ला ने गोरखपुरवासियों सहित प्रदेश और देशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए पर्व का महत्व रेखांकित किया। गोरखनाथ मंदिर और रामघाट पहुंचकर उन्होंने श्रद्धालुओं संग परंपरागत तरीके से भगवान सूर्य की उपासना की, जिससे समूचे माहौल में विशेष उत्सव की झलक दिखाई दी। छठ महापर्व मनाने के लिए दिल्ली सरकार के मंत्री सौरभ भारद्वाज एक खुले ट्रक में सवार होकर मिलेनियम पार्क में छठ पूजा मनाने पहुंचे।

नोएडा में सबसे बड़ा स्थान नोएडा स्टेडियम में बनाया गया है। यहां पर छठ पूजा मनाने आने वाले श्रद्धालुओं के लिए व्यापक इंतजाम किए गए। छठ घाट को फूलों से सजाया गया है और सिक्योरिटी की चाक चौबंद व्यवस्था की गई ।

नीतीश व नड्डा पहुंचे घाटों पर

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा भी पटना के गंगा तट पहुंचे और छठ घाटों का दौरा किया। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और भाजपा अध्यक्ष नड्डा पटना के छठ घाट पहुंचे स्टीमर पर सवार होकर छठ घाटों का दौरा किया। इस दौरान उनके साथ उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, विजय कुमार सिन्हा और भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल भी मौजूद रहे।

पीएम मोदी ने दी बधाई

पीएम मोदी ने ट्विट कर छठ की शुभकामनाएं देशवासियों को दी उन्होंने अपने ट्विट में लिखा कि महापर्व छठ में आज नहाय-खाय के पवित्र अवसर पर सभी देशवासियों को मेरी शुभकामनाएं। विशेष रूप से सभी व्रतियों को मेरा अभिनंदन। छठी मइया की कृपा से आप सबका अनुष्ठान सफलतापूर्वक संपन्न हो।

फोटो: सुमित कुमार

राजधानी लखनऊ के लक्ष्मण मेला मैदान में उगते सूरज को अर्घ्य देने आई व्रती महिलाएँ।

व्रती महिलाओं ने उगते सूर्य को दिया अर्घ्य, संपन्न हुई छठ पूजा

दोस्तपुर। दोस्तपुर में शाहीपुल स्थित पोखरे पर छठ पूजा का आयोजन बड़े धूमधाम से संपन्न हुआ। कस्बे के हजारों श्रद्धालु इस मौके पर एकत्रित हुए थे, जहां व्रती महिलाओं ने पारंपरिक रीति-रिवाजों के अनुसार उगते सूर्य को अर्घ्य अर्पित किया। शाहीपुल स्थित पोखरे के किनारे, महिलाओं ने छठी माई और सूर्य देवता की पूजा करते हुए, पारंपरिक गीतों और मंत्रों के बीच अर्घ्य अर्पित किया। इस मौके पर लोग जल में खड़े होकर सूर्य को अर्घ्य देते हुए अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति की कामना कर रहे थे इस आयोजन के दौरान सुबह तीन बजे से ही पोखरे के पास थाना प्रभारी दोस्तपुर पंडित त्रिपाठी, बेवाना प्रभारी प्रेमचंद, अध्यक्ष प्रतिनिधि रमेश सोनकर एवं अधिशासी अधिकारी सचिन पाण्डेय, पुनीत मोदनवाल, आर्येंद्र पाठक, और आलोक मिश्रा, मनोज गुप्ता, नीलेश सिंह, राजू तिवारी आदि मौजूद रहे।

जम्मू-कश्मीर विस में अनुच्छेद 370 मुद्दे पर फिर मचा बवाल

» विधायकों के बीच जमकर हुई धक्का-मुक्की और हाथापाई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जम्मू। अनुच्छेद 370 की बहाली को लेकर जम्मू कश्मीर विधानसभा में आज फिर हंगामा हो रहा है। सत्र के पांचवे दिन विधानसभा में कुपवाड़ा से पीडीपी विधायक द्वारा अनुच्छेद 370 की बहाली पर बैनर दिखाए जाने के बाद हंगामा हुआ। आज फिर विधायकों के बीच हाथापाई हुई। भाजपा विधायकों द्वारा नारेबाजी की गई।

इंजीनियर राशिद के भाई और अवामी इत्तेहाद पार्टी के विधायक खुर्शीद अहमद शेख को मार्शलों द्वारा सदन से बाहर निकाला गया। विधानसभा में पीडीपी के खिलाफ नारे लगे। इससे पहले गुरुवार को भी विधानसभा में काफी हंगामा देखने को मिला था। विधायकों के बीच हाथापाई देखने को मिली थी। वहीं, जम्मू-कश्मीर विधानसभा अध्यक्ष अब्दुल रहीम राथर के आदेश पर सदन के वेल में प्रवेश करने वाले भाजपा विधायकों को मार्शलों द्वारा बाहर निकाल दिया गया। पीडीपी और पीपुल्स कॉन्फ्रेंस (पीसी) सहित विधायकों के एक समूह ने वीरवार को विधानसभा में एक नया प्रस्ताव पेश किया। इसमें अनुच्छेद 370 और 35ए को उनके मूल स्वरूप में तत्काल बहाल करने की मांग की गई।

तेजस्वी सूर्या पर झूठी खबर फैलाने का आरोप

» कर्नाटक में एफआईआर दर्ज

» किसान आत्महत्या और वक्फ भूमि विवाद पर की थी पोस्ट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बेंगलुरू। हावेरी जिले में एक किसान की आत्महत्या के संबंध में कथित तौर पर फर्जी खबर फैलाने के आरोप में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद (सांसद) तेजस्वी सूर्या और कई कन्नड़ समाचार पोर्टलों के संपादकों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। सांसद द्वारा सोशल मीडिया पर मौत को वक्फ बोर्ड से जुड़े भूमि विवाद से जोड़कर एक पोस्ट साझा करने के बाद पुलिस ने कार्रवाई की है, जिसे बाद में स्थानीय अधिकारियों ने खारिज कर दिया था।

7 नवंबर को बेंगलुरु साउथ का प्रतिनिधित्व करने वाले तेजस्वी सूर्या ने प्लेटफॉर्म एक्स पर कन्नड़ समाचार पोर्टलों का एक लेख साझा किया, जिसमें दावा किया गया कि एक किसान, रुद्रप्पा चन्नप्पा बालिकाई, ने आत्महत्या कर ली थी। सूर्या ने इस मौके का फायदा उठाते हुए राज्य सरकार के अल्पसंख्यक मामलों से निपटने के तरीके की भी आलोचना की और आरोप लगाया कि प्रशासन की कार्रवाइयां कर्नाटक में अशांति पैदा कर रही हैं। बाद में यह पता चलने के बाद कि दावे निराधार थे, पोस्ट हटा दी गई। हावेरी जिले के पुलिस अधीक्षक (एसपी) ने स्पष्ट किया कि रुद्रप्पा चन्नप्पा बालिकाई की आत्महत्या 6 जनवरी, 2022 को हुई थी, लेकिन इसका वक्फ बोर्ड के किसी भूमि विवाद से कोई संबंध नहीं था। एसपी ने पुष्टि की कि आत्महत्या का कारण फसल के नुकसान और बकाया ऋण के कारण वित्तीय दबाव था। आपराधिक प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 174 के तहत एक अंतिम रिपोर्ट पहले ही प्रस्तुत की जा चुकी थी, और मामले में कोई नई जांच नहीं हुई थी। एसपी ने एक बयान में कहा कि तेजस्वी सूर्या द्वारा साझा की गई खबर पूरी तरह से झूठी है। ऐसी कोई घटना रिपोर्ट नहीं की गई, और प्रस्तुत की गई जानकारी भ्रामक है।

नगर निगम: जारी है फर्जी नियुक्तियों का खेल

नगर निगम के स्वास्थ्य विभाग की कार्यशैली और पारदर्शिता पर उठ रहे सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। नगर निगम के स्वास्थ्य विभाग में फर्जी नियुक्ति का खेल थमने का नाम ही नहीं ले रहा है। बीते सालों में मृतकों के स्थान पर कई फर्जी नियुक्तियां कराए जाने के मामले नगर निगम मे उजागार हुए हैं जो कि एक गंभीर मुद्दा बनता जा रहा है। ये मामले अब नगर निगम की कार्यशैली और पारदर्शिता पर सवाल उठाते हैं।

नगर निगम लखनऊ के स्वास्थ विभाग बाल्दा में सफाई कर्मचारी होकर अधिष्ठान संबंधित कार्यों को किया जाता है। चूंकी सफाई कर्मचारी अशिक्षित होता है, जिससे उनका शोषण कई दशकों से हो रहा है। उनके ग्रेच्युटी, पेंशन या अन्य भुगतानों का मामला हो या उनकी नियुक्ती

का प्रकरण हो, बालदा मे बैठे लिपिकों व उनके सहायक के रूप मे कार्य कर रहे सफाई कर्मचारी जो खुद को बाबू बताते हैं, बिना घूस लिए काम ही नहीं करते हैं। नगर निगम में सफाई कर्मचारियों की नियुक्ति प्रक्रिया में गंभीर अनियमितताएं सामने आती रहती हैं जिस पर नगर आयुक्त पहले से सख्त हुए हैं।

अभी भी सक्रिय है दलालों का समूह

सूत्रों के अनुसार, दलालों के एक समूह ने फर्जी नियुक्तियां करायी हैं और आज भी प्रयासरत रहते हैं। जिससे नगर निगम की वित्तीय स्थिति और पारदर्शिता पर सवाल उठते हैं। ताजा मामला स्वर्गीय मन्नू पुत्र राम गुलाम कश समिति 10 महानगर वार्ड जोन 3 का है। जिसकी मृत्यू लगभग 13 वर्ष पूर्व हो गयी थी, जिस पर मृतक की बहन द्वारा बेटे के नाबालिग होने पर प्रार्थना पत्र लिया गया था और सूचित किया गया था कि बालिग होने पर अनुकंपा के आधार पर पुत्र की मृतक आश्रित नियुक्ति किए जाने की कार्यवाही की जाए। लेकिन इसी बीच नगर निगम मे घूम रहे दलाल और अराजक तत्वों द्वारा मृतक के स्थान पर किसी अन्य की फर्जी नियुक्ती की पत्रावली की कार्रवाई प्रचलित करा दी गई है।

ऐसी नियुक्तियों पर जांच कराने की आवश्यकता

ये कोई नगर निगम के स्वास्थ्य विभाग में पहला मामला नहीं है। ऐसे कई मामले समय-समय पर खुलते रहते हैं। बीते तीन वर्ष पूर्व स्वास्थ्य विभाग में जुनैद नाम के लिपिक ने तो अपना खुद का एक डिस्पैच रजिस्टर बना रखा था जिस पर वह फर्जी नियुक्ती लेटर व फर्जी ट्रांसफर लेटर जारी किया करता था। जिस पर निलंबित भी हुआ। नियुक्ति के इस मामले में नगर आयुक्त द्वारा जांच कराए जाने की आवश्यकता है, ताकि दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जा सके और नगर निगम की कार्यशैली में सुधार किया जा सके।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।